आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 12 अगस्त 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 12 अगस्त 2018 से 18 अगस्त 2018

श्रावण शु. – 01 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 32, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. फिल्लौर लगाएगा इस वर्ष में 12,000 वृक्ष

डी.आर.वी. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, फिल्लौर ने वृक्ष के घटते अनुपात के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए अधिकाधिक वृक्षों के आरोपण को अपना कर्त्तव्य समझकर वृक्षारोपण की ओर अपना कदम बढ़ाया है। सत्र 2018–19 के आरंभ में मार्च माह में विद्यालय ने वर्ष भर में 12,000 हज़ार वृक्षारोपण का संकल्प लिया। मार्च माह से प्रति माह 1000 वृक्ष लगाते हुए अब तक 5000 वृक्ष लगाने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। यह क्रम इसी प्रकार आगे बढ़ाते हुए इसकी निरंतरता बनाए रखने तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए डी.ए.वी. स्कूल, फिल्लौर प्रतिबद्ध है।

वृक्ष लगाने के साथ स्थानीय लोगों द्वारा उनकी देखभाल को भी सुनिश्चित किया गया। आगामी समय में भी वृक्षारोपण कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए न केवल 12,000 वृक्ष लगाने के लक्ष्य को प्राप्त किया जाएगा बल्कि उससे भी अधिक संख्या में पहुँचने के प्रयास किए जाएँगे जिससे वृक्ष लगाने का कार्य किसी संख्या में बंधा न रहे।

'सेंटर फार साइंस एंड एनवायरनमैंट' की ओर से आयोजित प्रतिष्ठित 'ग्रीन स्कूल अवार्ड' प्राप्तकर्ता के रूप में विद्यालय पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने में उसके लिए कार्य करने को अपना कर्त्तव्य समझता है। इसे व्यावहारिक रूप देने में वृक्षारोपण करना एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जिसका पालन विद्यालय कर रहा है। प्रधानाचार्य श्री योगेश गंभीर ने कहा कि प्रकृति संसाधन रूप में जो कुछ हमें देती है, उसका संरक्षण करना सदुपयोग करना हम सभी का प्रमुख कर्तव्य है। डी.ए.वी. स्कूल, फिल्लौर अपने संकल्प को आगे बढ़ाने, पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

'आर्य जगत्' अपने सभी सुधी पाठकों को स्वतंत्रता दिवस के इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता है। हमारा देश स्वतंत्रता के एक नए वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। स्वतंत्रता दिवस के इस उल्लास में हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए स्वराज्य और स्वाधीनता के रूप को ध्यान में रखना आवश्यक है। आइए महर्षि दयानन्द के दिखाए हुए वेदों के मार्ग पर चलते हुए स्वतंत्रता का उपभोग करते हुए नित नवीन ऊँचाइयों को छूने का प्रयास करें। – सम्पादक

डी.ए.वी. हुडा पानीपत में योग के महत्व पर हुई चर्चा

डी.ए.वी. सेंटनरी पब्लिक स्कूल, हुडा, पानीपत हरियाणा में इस अवसर पर विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा विद्यालय के अध्यापक, अध्यापिकाओं ने योगाभ्यास किया।

अध्यापिका अमन ज्योति ने योग का अर्थ बताकर उससे होने वाले फायदों के बारे में बताया। ऋग्वेद में भी योग का बहुत उल्लेख किया गया है। योग मन की वृत्तियों को शान्त करने का काम करता है। योग व प्राणायाम करके हम अपनी थकान दूर कर सकते हैं, तनाव कम कर सकते हैं। अध्यापिका सोनिया पुरी व अध्यापक सुरेन्द्र जागलान ने अनेक आसनों का प्रदर्शन करके दिखाया और उससे होने वाले शारीरिक फायदों से अवगत कराया। अध्यापिका अमन ज्योति ने प्राणायाम व ध्यान की मुद्रा से पूरे शरीर को चुस्त व तंदुरुस्त रखने के तरीके बताए।

प्रधानाचार्य श्री हरेश पाल पांचाल ने कहा कि योग से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। 'करो योग रहो निरोग' के अनुसार हर व्यक्ति जीवन में निरोग रहना चाहता है। यदि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो हमें दृढ़ संकल्प करके नित्य प्रति की दिनचर्या में योग को शामिल करना होगा। प्रधानाचार्य ने सभी लोगों को बधाई दी तथा शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. हाथी गेट, अमृतसर में कारगिल विजय दिवस पर श्रद्धांजलि समारोह

डी.भारतीय सेना के इतिहास को एक नए शिखर तक पहुँचाने वाले कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में डी.ए.वी. सी. सै. स्कूल, हाथी गेट की पावन यज्ञशाला में यज्ञ का आयोजन किया गया। 26 जुलाई, 1999 को समाप्त हुए युद्ध में भारत को विजय दिलाने में शहीद हुए वीर सैनिकों को यज्ञ के माध्यम से स्मरण कर श्रद्धाँजलि भेंट की गई। इस अवसर पर अर्जुन अवार्डी, ऑलम्पियन ब्रिगेडियर, हरचरण सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर विद्यार्थियों को इस गौरवशाली दिन से अवगत कराया

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। –स. प्र. समु. ९

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 12 अगस्त 2018 से 18 अगस्त 2018

विकलांगों के प्रति सद्भाव रखें

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यस्यानक्षा दुहिता जात्वास, कस्तां विद्वाँ अभिमन्याते अन्धाम्।
कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते, य ईं वहाते य ईं वा वरेयात्।।

ऋग् १०.२७.२२

ऋषिः **ऐन्द्रो वसुक्रः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(यस्य)** जिसकी, **(दुहिता)** पुत्री, **(जातु)** कदाचित्, **(अनक्षा)** बिन आँखों की, **(आस)** हो जाती है **[तो]**, **(कः विद्वान्)** कौन विद्वान्, **(तां)** उसे, **(अन्धां)** अन्धी, **(अभिमन्याते)** मानता है।, **(कतरः)** कौन, **(तं प्रति)** उसके प्रति, **(मेनिं)** वज्र, **(मुचाते)** छोड़ता है, **(यः)** जो, **(ईं वहाते)** इसके भार को वहन करता है, **(यः वा)** या जो **(ईं वरेयात्)** इसे वरता है, इससे विवाह करता है।

● क्या तुम किसी विकलांग को देखकर सहानुभूति से द्रवित होने के स्थान पर कठोर हो जाते हो? क्या तुम सोचते हो कि विधाता ने ऐसे हाथ, पैर, अंगुलि, आँख, जिह्वा, श्रोत्र आदि किसी अंग से विकृत करके इसे कष्ट भोगने के लिए ही सृजा है?

यदि तुम्हारा अपना कोई सम्बन्धी विकलांग होता, तो भी क्या तुम उसके प्रति ऐसा ही व्यवहार करते? किसी अन्धे, काने, लूले, लंगड़े, बहरे, कुष्ठी आदि को देखकर तुम्हारी आँखे भर क्यों नहीं आतीं, हृदय दयार्द्र क्यों नहीं होता, ममता क्यों नहीं उद्वेल्लित होने लगती, सहायता की भावना क्यों नहीं बल लाती? तुम सहानुभूति प्रदर्शित करने के स्थान पर उल्टा अन्धे को अन्धा कहकर पुकारते हो और कटे पर नमक छिड़कते हो। क्या तुम उसे बेटा, भैया या बाबा सूरदास नहीं कह सकते? क्या तुम्हें पंगु को लंगड़दीन कहने में ही आनन्द आता है?

देखो, यदि किसी की पुत्री बिना आँखोंवाली होती है, तो क्या वह उसे अन्धी कहकर पुकारता है? नहीं, उसके लिए तो वह 'रानी बेटी' ही होती है। उसकी उस अन्धी पुत्री के भार को यदि कोई वहन करता है और उसका पाणिग्रहण करता है, तो क्या उसके प्रति उसके नेत्र सजल नहीं हो जाते और उसे वह साधुवाद नहीं देता? क्या वह उस सहायक के प्रति वाणी से वज्रपात करता है? क्या वह उसे बुरा–भला कहता है? क्या वह उसे मारने के लिए हाथ में वज्र उठाकर दौड़ता है? नहीं वह तो उसका माथा चूमता है और उसे शत–शत धन्यवाद देता है। ऐसा ही व्यवहार क्या उसे किसी दूसरे की पुत्री को अन्धी देखकर नहीं करना चाहिए? ऐसा ही दयालुता का बर्ताव क्या उसे अन्य किसी अंग से विकल भाई, बहन, पुत्री आदि को देखकर नहीं करना चाहिए?

अतः आओ, आज से विकलांगों की सहायता का व्रत लें। किसी भी विकलांग को देखकर उसके प्रति ममत्व की भावना मन में जागृत करें। स्वयं से व्यक्तिगत रूप में जो भी हो सके, उसके लिए करें और उसे समाज एवं राष्ट्र से भी सहायता दिलाने का प्रयत्न करें। विकलांगों के लिए आतुरालय, शिक्षणालय आदि खुलवाकर उनके प्रति जो हमारा ऋण है, उससे उऋण हों।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

स्वामी जी ने **''उपनिषदों के ब्रह्म–ज्ञान का प्रभाव''** पर कथा सुनाते हुए कहा अमूल्य वस्तु नष्ट हो जाने पर कहना अच्छा हुआ विलासिता का सामान समाप्त हो गया। यह है उपनिषदों और उनके ब्रह्म–ज्ञान का महत्त्व! **''उपनिषदों का प्रथम सन्देश–दृढ़ संकल्प''** पर एक कथा सुनाते हुए कहा उपनिषदों का सबसे प्रथम सन्देश है– दृढ़ संकल्प। जो भी करना है, दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ो, अवश्य सफलता मिलेगी। **''अतिथि–यज्ञः हमारी संस्कृति का महान् आधार''** पर एक कथा सुनाते हुए कहा अतिथि–यज्ञ की भावना तो हृदय में उत्पन्न करनी ही चाहिए। अतिथि–यज्ञ हमारी संस्कृति का एक महान् आधार है। इसलिए इसे आर्य लोगों में जीवन के दैनिक कर्मों का एक अंग बताया गया है।

आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः

आयुर्वेद–शास्त्र के महान् ग्रन्थ 'चरक' को लिखने वाले महर्षि पुनर्वसु अपने अद्वितीय ग्रन्थ को लिखने के पश्चात् एक जंगल में चले जा रहे थे। घने जंगल में पगडंडी पर आगे वे थे, पीछे उनका शिष्य अग्निवेश।

एकाएक महर्षि पुनर्वसु खड़े हो गये। आगे की ओर देखा उन्होंने, चारों ओर देखा। एक लम्बी साँस लेकर बोले– "महानाश आने वाला है।"

अग्निवेश ने पूछा– "कैसा महानाश, गुरुदेव?"

पुनर्वसु बोले– "मैं देखता हूँ कि जल बिगड़ रहा है, पृथिवी बिगड़ रही है, वायु, तारे, आकाश, सूर्य और चन्द्र बिगड़ रहे हैं। अरे, अनाज अपनी शक्ति छोड़ देगा। ओषधियाँ अपना प्रभाव छोड़ देंगी। पृथिवी पर टूटते हुए तारे गिरेंगे। विनाश करने वाली आँधियाँ चलेंगी। विनाशकारी भूकम्प उठेंगे। बड़े–बड़े बम गिरेंगे। महानाश का महाताण्डव जाग उठेगा। मनुष्य बचेगा नहीं, बचेगा नहीं।"

यह कथा 'चरक' के विमान–स्थान के तीसरे अध्याय में आती है। इसमें लिखा है कि अग्निवेश ने जब यह भयानक भविष्यवाणी सुनी तो हाथ जोड़कर कहा– "गुरुदेव! आप यह भयभीत करने वाली भविष्य–गाथा क्यों कर रहे हैं? सब रोग का सामना कर सकें, ऐसा ग्रन्थ आपने लिख दिया। दुनिया के प्रत्येक रोग का इलाज लिख दिया। फिर भी यह विनाश आयेगा तो क्यों?"

महर्षि पुनर्वसु ने कहा– "इसलिये आयेगा कि लोग धर्म को छोड़कर अधर्म की ओर चल पड़ेंगे– सत्य को छोड़कर असत्य की ओर। सत्य और धर्म में रुचि नहीं रहेगी।"

अग्निवेश ने पूछा– "धर्म और सत्य की ओर मनुष्य की रुचि न रहने का क्या कारण होगा, गुरुदेव?"

गुरु बोले– "बुद्धि का बिगड़ जाना ही इस महानाश का कारण होगा। जब बुद्धि बिगड़ जाती है, जब वह सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य की ओर बढ़ती है, तब धर्म में रुचि नहीं रहती।"

बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है, परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवल शारीरिक रोग पैदा नहीं होते, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और आत्मिक, सभी रोग पैदा होते हैं। इसलिये कहते हैं कि जब नाश का समय निकट आता है, तब बुद्धि उलटे मार्ग पर चलने लगती है। भगवान् कृष्ण ने भी गीता में कहा है–

बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।

बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है।

84 लाख योनियों का चक्र

एक था बेचारा सूरदास। ऐसे दुर्ग में फँस गया, जिसमें भयानक अग्नि जल रही थी। कितने ही भयानक पशु वहाँ चिल्ला रहे थे। एक ओर यह झुलसा देने वाली गर्मी, दूसरी ओर इस भयानक पशुओं की गर्जना और दहाड़। बेचारे सूरदास ने प्रयत्न किया कि दुर्ग से बाहर निकले, परन्तु जिधर भी वह जाता, उधर का द्वार उसे बन्द मिलता। 84 लाख द्वार थे, परन्तु बेचारे सूरदास को एक भी द्वार खुला नहीं मिला। भय और कष्ट से घबरा गया और चिल्लाकर बोला– "अरे, कोई मुझ पर दया करके बताओ कि इस दुर्ग में कोई द्वार खुला भी है या नहीं?"

एक और व्यक्ति ने उसकी अवस्था देखी। उसके पास जाकर कहा– "सूरदास! 84 लाख द्वार है यहाँ, केवल एक खुला रहता है।"

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

राष्ट्र के नागरिक जागरूक तो राष्ट्र जागरूक

● आचार्य श्रुति भास्कर

यो जागार तं ऋचाः कामयन्ते,
यो जागार तं सामानियन्ति,
यो जागार तं सोम अह...
(ऋगवेद–2)

वयंम राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता (यजुर्वेद–9)

अर्थात् सफल जीवन एवं सफल राष्ट्र का मूल मंत्र है जागरूकता। सफल जीवन से तात्पर्य है स्वस्थ यशस्वी जीवन जीते हुये सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति, धन, धान्य से पूर्ण संसार (सोम)। संसार के रचियता परमधन्यवादी परमात्मा का धन्यवाद करना अर्थात् भक्ति करना (साम)।

वेद मंत्र हमारे जीवन में अनेक रूपों में आते हैं। कहीं उपासना है, कहीं ईश्वर स्वरूप का वर्ण, कहीं कर्त्तव्यबोध, कहीं ज्ञान विज्ञान है, इस वेद मंत्र में चेतावनी दी गई है, कि जो जागता है, उसी की कामनाएँ पूर्ण होती हैं। हमारे जीवन में वेद की ऋचाएँ तभी आती हैं जब हमारा सम्बन्ध वेद प्रदाता परमात्मा से होता है। हम जागरूक तभी होते हैं जब हमारा सम्बन्ध परम् जाग्रत परमात्मा से होता है।

जागरूकता की मुख दो कसौटी है–

(1) अपने कर्त्तव्य एवं दायित्व के प्रति सजग रहना।

(2) जीवन, परिवार, समाज एवं राष्ट्र में होने वाली घटनाओं की अनदेखी ना करना।

महर्षि दयानन्द जागरूक थे, शिवपिण्ड के ऊपर चूहे की घटना को उन्होंने नज़रन्दाज नहीं किया। उस घटना के कारण ही उनकी प्रबल इच्छा ईश्वर प्राप्ति सम्भव हो सकी। जबकि सामान्यजन ऐसी अनेक घटनाओं की अनदेखी कर देते हैं क्योंकि वह जागरूक नहीं होते।

वेद की ऋचाएँ कामनाओं को पूर्ण करती हैं और हमें जागरूक करती है। यह तभी सम्भव है जब हमारा सम्बन्ध वेद प्रदाता परमात्मा से होता है। अग्निदेव परमात्मा परम जाग्रत एवं त्रिकाल दर्शी है, जब हम उसकी भक्ति करते हैं तो हमारे अन्दर भी जागरूकता आती है, अग्नित्व आता है।

यजुर्वेद के नौवें अध्याय में कहा गया है–

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

अर्थात् अपने राष्ट्र को सफल राष्ट्र एवं विश्व में अग्रणी राष्ट्र बनाने हेतु हम सदैव प्रयत्नशील रहें। जिस राष्ट्र के नागरिक जागरूक होते हैं, वह राष्ट्र जागरूक होता है। परम जाग्रत, परम प्रेरक अग्निदेव परमात्मा को ही उपास्य देव मानकर जीवन जीने से जागरूकता आती है। किन्तु इस राष्ट्र के 80 प्रतिशत नागरिक जागरूक नहीं हैं क्योंकि 80 प्रतिशत लोगों ने अपना उपास्य देव चेतन के स्थान पर अजाग्रत जड़मूर्ति की या किसी पीर को, सांई को, शरीरधारी गुरू को मान रखा है, फिर जागरूकता कहाँ से आयेगी, वेद और विद्वानों के सम्पर्क में न आने के कारण विद्वता पूर्ण विचारों का अभाव भी अजागरूक होने का सबसे बड़ा कारण है।

क्रांतिकारी जिन्होंने राष्ट्र के लिये अपने आपको समर्पित किया, वेद मंत्र एवं महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रभावित थे। क्रांतिकारी जैनमत, निरंकारी मत, राधास्वामी मत के अनुयायी नहीं थे। वर्तमान में राष्ट्र अनेक समस्याओं से ग्रसित है, उसका सबसे बड़ा कारण नागरिकों में जागरूकता का अभाव। राष्ट्र को कमज़ोर बनाने में अविद्वानों का बहुत बड़ा हाथ है, अविद्वान लोगों को भाग्यवादी, अवतारवादी, राशिफल वादी एवं अजागरूक अपने विचारों से बनाते हैं क्योंकि उनके विचार वेद के विरुद्ध होता है। इसके विपरीत विद्वान, राष्ट्र के नागरिकों को पुरुषार्थी, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं जागरूक बनाते हैं।

वर्तमान में आर्य समाज एवं सभी जागरूक समाज के व्यक्तियों को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र राजनीति के प्रति सक्रियता दिखानी चाहिए। राजनैतिक पार्टी एवं राजनीतिज्ञों द्वारा उन क्रिया–कलापों या विचारधारा वक्तव्यों का जो समाज एवं राष्ट्र को नुकसान पहुँचाते हैं, उनके विरोध करने हेतु सदैव सक्रिय रहें।

अब समय आ गया है, राष्ट्र को जागरूक बनाने में अपना योगदान करें। जीवन समाज एवं राष्ट्र में होने वाली घटनाओं की अनदेखी न करें, बल्कि उसके परिणाम के प्रति सतर्क रहें एवं दूसरों को सतर्क करें।

धार्मिक प्रवक्ता एवं सामगायनाचार्य
वेद मन्दिर, सहारनपुर (उ.प्र.)
मो. 9412742557

ऋषि दयानन्द का एक विशेष दृष्टिकोण

● पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

जैसा कि अन्य सभी मतावलम्बी मानते हैं कि ईश्वर ही केवल एक नित्य सत्ता है, सृष्टि से पूर्व उसके सिवाय कुछ न था और उसी ने यह सृष्टि उत्पन्न की, तो एक विचारशील मनुष्य के हृदय में इतने प्रश्न उपस्थित होते हैं कि अन्त में आस्तिकता रूपी वस्त्र की धज्जियाँ उड़ जाती हैं और अन्त में नास्तिक्य या सन्देहवाद ही शेष रह जाता है। अर्थात् यदि ईश्वर से भिन्न कोई था ही नहीं और ईश्वर था अनन्त, पूर्ण या आनन्द स्वरूप तो फिर दृष्टि की उत्पत्ति की आवश्यकता क्या थी। और सृष्टि भी ऐसी जिसमें दुःख और पाप का बाहुल्य। उस ईश्वर की महत्ता और विशालता का क्या अर्थ जो ऐसी त्रुटिपूर्ण सृष्टि बनावे। वह ईश्वर कैसे दयालु कहलाया जा सकता है जो पापियों को बनाकर और उनको पाप का अक्सर देकर फिर उन पर दया दिखाने की चेष्टा करे।

किसी फ़ारसी के कवि ने कहा है–

दरमयाने क़अर दरिया तख़्ताबन्द कर दई।
बाज़ में गोई कि दामन तर मकुन् हुशियार वाश।।

अर्थात् तूने मुझे बनाया, मेरी निर्बल और पापोन्मुखी प्रवृत्ति को बनाया। ऐसी दुनियाँ बनाई जिसमें इतने प्रलोभन हैं। मुझे उन प्रलोभनों में फँसने का अवसर दिया। अब कहता है कि देख पाप न करना, विषय वासना में न फँसना। यह तो दयालुता नहीं है। इसलिये नास्तिक कहता है कि या तो ईश्वर कमजोर और दयालु है। हमारा भला चाहता है परन्तु उसकी चलती नहीं। या ईश्वर निर्दयी है जो अन्याय विपत्तियों में हमको फँसाये रखता है। परन्तु नास्तिकों ने आस्तिक्य पर इस प्रकार के आक्षेप करके भी कोई इस उलझन के सुलझाने की तरकीब नहीं बताई। सन्देहवाद और अनीश्वरवाद कोई ऐसा मार्ग नहीं बताता जिससे अधिक सान्त्वना मिल सके। आर्यसमाज और वैदिक धर्म का मत यह है कि–

(1) यह कहना गलत है कि कोई ऐसा समय था जब ईश्वर के सिवाय और किसी का अस्तित्व न था।

(2) यह कहना गलत है कि ईश्वर ने बिना किसी कारण के जीवों और प्रकृति आदि पदार्थों को बनाकर अपनी ओर से एक प्रपञ्च खड़ा कर दिया।

(3) यह कहना गलत है कि ईश्वर ही एकमात्र नित्यसत्ता है।

(4) वेद ने कहा है कि–

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे

पहले हिरण्यगर्भ था। अर्थात् वह ईश्वर था जिसके गर्भ में जीव, प्रकृति आदि अनेक हिरण्यमयी सत्तायें थीं। अर्थात् सृष्टि के पूर्व ऐसा ईश्वर न था जिसके साथ और कुछ न होता। ईश्वर था हिरण्यगर्भ। अर्थात् ज्योतिर्मयी सत्ताओं के कारण से परिपूर्ण। जीव नित्य हैं और स्वतंत्र हैं। जीव ईश्वर के हाथ में खिलौने नहीं है। उसने अपने खेलने के लिये हमको नहीं बनाया। हम तो नित्य सत्ता थे। अल्प थे। हमको लाभ पहुँचाने के हेतु हमारे विकास के लिये उसने सामग्री जुटा दी। हम इस सामग्री का उपयोग करें और सुख उठावें या दुरुपयोग करके दुःख उठावें। ईश्वर ने हमको अग्नि दी। इससे सुख की सामग्री बनावें या इसको आँख में झोंककर अपनी आँखें फोड़ लेवें। ईश्वर ने न पाप बनाया न दुःख। जो सामग्री पाप या दुःख का हेतु है वही पुण्य और सुख का हेतु हो सकती है। जिसने मुझे तलवार दी उसने यह तो नहीं कहा कि अपना ही सिर काट लेना। वैदिक ईश्वरवाद की यह विशेषता है कि ईश्वरवादियों और अनीश्वरवादियों की ईश्वर विषयक बीसियों मिथ्या कल्पनाओं और उनसे फलित उलझनों से छुटकारा दे देता है। हिरण्यगर्भ शब्द वेद में आया है। हिन्दू दार्शनिकों और धर्म–प्रचारकों को इस शब्द का शताब्दियों से परिचय था। परन्तु शंकर आदि आचार्यों के वेदान्त के मिष से हिरण्यगर्भ का एक अनोखा ही कल्पित रूप खड़ा कर दिया जिससे उलझन सुलझाने के बजाय दुगुणी हो गई। वेद मन्त्र के शब्द तो सीधे हैं कि सृष्टि से पहले हिरण्यगर्भ था (समवर्तत)। अर्थात् घड़ों की उत्पत्ति से पूर्व न केवल कुम्हार थे। अपितु जिस मिट्टी से घड़े बनने थे वह मिट्टी भी थी और जिनको घड़ों की जरूरत है वह प्राणी भी थे। वह हिरण्यगर्भ कैसा था? **भूतस्य जातः पतिः एकः** अर्थात् उन सबका पालक–पोषण और संशय सहित शक्तिशाली। उसने घड़ा बनाया। क्यों? इसलिये कि घड़े की आवश्यकता को अनभुव करने वाले प्राणी थे। उसको देखकर दया आती थी। उपमा शून्य सीधी भाषा में कह सकते हैं कि ईश्वर सोचता था कि इन जीवों को आँखों की जरूरत है। यदि मैं आँखें न दूँ तो यह विचारे नेत्रहीन अन्ध क्या करेंगे! उसके पास आँखों की सामग्री भी थी। उसने आँखें भी बनाई और उनकी सहायता के लिये सूर्य भी बना दिया। यह है कृपा। और कृपा इसलिए कि इस सृष्टि निर्माण में उसका लेशमात्र भी स्वार्थ नहीं है। मैंने अपने लघु लेख में इसी बात का उल्लेख किया। ईश्वरवादियों के मस्तिष्क में ईश्वर की नित्यता का ऐसा भ्रमान्वित जाल भरा हुआ है कि यह बात उनको चौंका देती है। परन्तु हमको इस सिद्धान्त का सौंदर्य लोगों को बताना है। (जीवन–चक्र (रजत–जयन्ती), पृ. 416–419)

उक्तरूपे विमभे विशेषेणे परिच्छिनत्ति। किं स्वोपभोगाया नेत्याह। सुक्रतू यया शोभनकर्मेच्छया। येन कर्मणा प्राणिनां सुखं संभवति तादृक् कर्मेच्छया।

(ऋग्वेद भाष्य 1।160।4 सायणकृत)

ऋषि दयानन्द का तत्त्व–दर्शन
से साभार

भारतीय संस्कृति बनाम वैदिक संस्कृति

● डॉ. सुशील वर्मा

यदि आज हम समग्र विश्व के इतिहास का अवलोकन करें, तो विश्व में प्राप्य संस्कृतियों में से यदि कोई प्राचीनतम संस्कृति है तो वह है वैदिक संस्कृति। जब अन्य देशों ने अभी कुछ सीखा ही नहीं था तो हमारे वैदिक आर्य सभी कला–कौशल में प्रवीण थे। आज भी हम उसी संस्कृति के बहुमुखी, व्यापक एवं शाश्वत प्रभाव को संजोए हुए हैं। वेद स्वयं इस विषय सम्बन्धी उद्घोष करता है–

"सा प्रथम संस्कृति विश्ववारा"

(यज 7/14)

विश्व के द्वारा स्वीकरणीय एवं प्रमुख, वैदिक संस्कृति ही है। आज हम भारतीय संस्कृति एवं भारतीय सभ्यता की बात करते हैं तो प्रश्न यह उठता है कि क्या आज हम उसी संस्कृति एवं सभ्यता का अनुकरण कर रहे हैं जो हमें परम्परागत प्राप्त हुई? क्या यह वही वैदिक संस्कृति है जिसे हमने वैदिक संस्कृति के नाम से स्मरण किया? क्या यह वही है जिसके कारण हमें गौरवमयी होने का श्रेय मिला? वही विश्वव्यापी संस्कृति जिसके बारे में डॉ. विण्टरनिट्ज कहते हैं–

If we wish to learn the beginning of our own Culture, if we wish to understand the oldest Indo-European Culture, we must go to India where the oldest literature of an Indo-European people is preserved."

उपरोक्त चर्चा में दो शब्द आ रहे हैं– 'संस्कृति एवं सभ्यता'। क्या ये दोनों एक ही हैं? वास्तव में सभ्यता से अभिप्राय है– मानवीय भौतिक विचारधारा। परन्तु संस्कृति मानव के आध्यात्मिक एवं मानसिक क्षेत्र के विकास की सूचक है। यह ठीक है कि भौतिक विकास से शारीरिक क्षुधा तो शान्त हो सकती है। आज वैज्ञानिक उन्नति हमें खूब प्रसन्न कर रही है, परन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में हम पिछड़ते जा रहे हैं। यहाँ छान्दग्योपनिषद् की नारदमुनि कथा दृष्टव्य है। नारद अपने गुरु सनत्कुमार को कहते हैं कि मैंने चारों वेद, इतिहास, गणित, अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, भौतिकी, रसायन, प्राणिशास्त्र ललित, नाट्य कला आदि सभी का अध्ययन किया है। यह सब कुछ पढ़कर मैं "मन्त्रवित्" तो हुआ परन्तु "आत्मवित्" नहीं। प्रव्योत्तर में गुरु उसे अध्यात्म का उपदेश देते हैं– **"यो वै भूमा तत्सुखम्, न अल्पेसुखमस्ति"।** इस उपदेश में गुरु उसे मानसिक स्तर से आत्मिक स्तर पर ले जाते हैं। उनका कहना है विस्तार में ही सुख है जिसे 'भूमा' नाम दिया गया है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि हमारे ऋषि बहुत अच्छे वैज्ञानिक भी थे, परन्तु उन्होंने अध्यात्मिकता को प्राथमिकता दी। कणाद ऋषि ने परमाणु पर अपना दर्शन जिसे "वैशेषिक दर्शन" कहा जाता है प्रस्तुत किया। एक परमाणु दूसरे परमाणु से किस विशेष धर्म में समान होते हुए भी पृथक है का विस्तृत वर्णन है। वहीं उन्होंने अपने दर्शन का उद्देश्य बताते हुए लिखा है– निःश्रेयस अथवा मोक्ष की प्राप्ति। जहाँ उन्होंने परमाणुवाद का प्रतिपादन किया है, वहीं ईश्वर, वेद, जीवात्मा, मोक्ष, पुनर्जन्म, प्रकृति आदि का भी उत्तम विवेचन किया है। इसी प्रकार 'सांख्य दर्शन' में कपिल मुनि ने 25 तत्वों द्वारा जड़ तथा चेतन का विवेचन। गौतम का "न्याय दर्शन" प्रमाण और प्रमेय के विशेष ज्ञान से निःश्रेयश की प्राप्ति। चेतन तत्व (परमात्मा) को जीवात्मा अर्थात् मनुष्य कैसे प्राप्त कर सकता है– यह है पतंजलि का "योग शास्त्र"। ब्रह्म का स्वरूप कैसा है? इसकी व्याख्या वेदान्त दर्शन में हैं जिसके प्रणेता महर्षि व्यास है, तथा यज्ञादि कर्मों का विवेचन मीमांसा दर्शन में हैं जिसके प्रवर्तक जैमिनी मुनि है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे ऋषियों ने अध्यात्म को ही उच्च स्थान दिया है।

हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का आधार वेद ही रहे परन्तु अफसोस इस बात का है कि महाभारत काल के समय से ही हमारी उस समाज का ह्रास होना प्रारम्भ हो गया था और आज विकृति की सभी हदें पार करते हुए हमारी उस परम्परा का स्वरूप ही बदल गया जिसे आज हम धर्म स्वीकार कर रहे हैं। वह तो अवैदिक है। पाखण्ड, अन्धविश्वासों ने वेदों की शिक्षा के विपरीत मूर्ति पूजा को सर्वोच्च स्थान पर स्थापित कर दिया। अलग अलग मत–मतान्तरों ने न जाने कितने गुरु पैदा कर दिए जो अपने आप को परमात्मा से भी ऊपर मानते हैं।

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर"

अर्थात परमात्मा तो है ही नहीं, वे ही ब्रह्म हैं, वे ही विष्णु, वे ही शिव (महेश) हैं। परिणाम आपके समक्ष हैं, कितने तथाकथित गुरु जेलों में चले गए और कितने ही इस मार्ग के पथिक हैं। जन सामन्य उन्हें ही परमात्मा स्वीकार करने में लगे हैं– अज्ञानता के कारण, वेदों के प्रतिकूल विचारधारा एवं स्वार्थ सिद्धि के वश में अभिभूत होकर। जन सामन्य को तो वेदों का ज्ञान तो बहुत दूर, उनके (वेदों के) नाम तक मालूम नहीं।

यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि हम पहले मुसलमानों के, तत्पश्चात अंग्रेजों के पराधीन रहे और हमारी सभ्यता एवं सस्कृति विकृत रूप धारण रकती। मुसलमान क्योंकि हमारी सभ्यता में इतने रस बस गये थे कि हमने उन्हें भी अपनी सभ्यता का अंग स्वीकार कर लिया क्योंकि अधिकतर मुसलमान हमारे ही हिन्दू भाई थे जिनके वंश हिन्दू ही थे और विवशता अथवा भय से इस्लाम को स्वीकार कर लिया था। पीरों–फकीरों ने हमारा ही ओढ़ना ओढ़कर हमारी सभ्यता को गंगा–जमनी तहजीब का नाम दे दिया। समझ में नहीं आता कि यमुना कैसे इस्लाम का प्रतीक बन गई? उन्हीं के पैगम्बरों, पीरों की कब्रों की पूजा करने लगे, मन्नतें माँगने लगे। हिन्दी के शब्द फारसी भाषा में जोड़ उर्दू भाषा को जन्म दिया जिसे हिन्दुस्तानी भाषा का नाम दे दिया। अंग्रेज तो इससे भी आगे बढ़ गए। हम उनके गुलाम शारीरिक रूप से ही नहीं, मानसिक तौर पर भी हो गए। अपनी संस्कृति को हम तिलांजलि दिए जा रहे हैं और पाश्चात्य सभ्यता के पराधीन हो रहे हैं जहाँ से वापिस लौटना असम्भव सा लग रहा है। हमने अपनी सभ्यता छोड़ी, संस्कृति छोड़ी, भाषा को त्यागा, वेशभूषा को त्यागा, अपना भोजन त्यागा, अपनी औषध त्यागी। यह है प्रभाव सभ्यता के बदलने का।

एक नीतिकार के शब्दों में मुसलमानों और अंग्रेजों के शासन का परिणाम

वने प्रज्वलितो वह्निर्दहन मूलानि रक्षति।
समूलोन्मूलनं कुर्याद वायुर्यो मृदुशीतलः।।

अर्थात जंगल में भड़की दावानल हरे–भरे जंगलों को भस्म कर डालती है। यह इतनी उग्र होती है कि मानवीय प्रयत्नों से आसानी से इसे नियन्त्रित नहीं किया जा सकता। यह तो दो अवस्थाओं में बुझती है– या तो जंगल में जलाने को तिनका तक भी न बचे अथवा प्रभु कृपा से लगातार वर्षा होती रहे। यह भयानक आग ऊपर–ऊपर से तो वृक्षों के तनों को भस्म कर देती है परन्तु भूमि में उनकी जड़ें सुरक्षित रह जाती हैं और वर्षा ऋतु में फिर से पल्लवित हो जाती हैं। किन्तु वायु जो अनुभव करने में बड़ी कोमल और ठण्डी लगती है, आँधी का रूप धारण कर वृक्षों को उखाड़ती है, उनकी जड़ें तक नहीं छोड़ती। अंग्रेजों के शासन ने ऐसे ही हमारी जड़ें उखाड़ दी। यही प्रभाव आज भी हमारी मानसिकता, संस्कृति एवं सभ्यता पर हावी है।

हमारी संस्कृति तो वैदिक संस्कृति है जो वेदों पर आधारित है। वे वेद जो अपौरुषेय है, किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं लिखे गए। वेद का ज्ञान तो सृष्टि के प्रारम्भ में ही प्राप्त होता है। जैसा कि विदित है कुरान की रचना तो मात्र 1400 वर्ष पूर्व ही हुई है। बाईबल की 2018, जन्दावस्था की लगभग 4,000 वर्ष। इन सब से पहले क्या प्राप्य नहीं था? बाल्मीकि रामायण में श्री राम द्वारा हनुमान जी को वेदों का महान ज्ञाता बताया गया है।

नानृग्वेदविनीतस्य न यजुर्वेदधारिणः।
न सामवेद विदुषः शक्यमेव विभाषितुम्।।

बा.रा.कि. 3/28

क्योंकि परमात्मा अपरिवर्त्तनशील है, उसके निर्मित्त नियम भी अपरिवर्तनशील है (अग्नि का नियम जलाना, जल का शीतलता प्रदान करना) ये नियम पहले भी थे, आज भी हैं, आगे भी रहेंगे। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक (1,96,08,53,119 वर्ष) हमारे वेद मन्त्रों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इन मन्त्रों को यथावत् रखने के लिए क्रमपाठ, जटापाठ, शिखापाठ, धनपाठ आदि की रचना हमारे ऋषियों ने की जबकि बाईबल का पुराना संस्करण Old Testament एवं नवीन New Testament प्रचारित हुए। इसी प्रकार कुरान पहले जबूर, फिर तौरेत, फिर इंजील और उसमें भी कुछ संशोधन कर कुरान की रचना हुई। इसी कारण हमारी संस्कृति "प्रथमा संस्कृति विश्ववारा" है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है, अपौरुषेय है, इसीलिए वेदों में कहीं इतिहास नहीं है। वहाँ किसी व्यक्ति विशेष स्थान, देश अथवा राजा महाराजा का वर्णन नहीं है। जबकि इसमें विपरीत बाईबल में पेल्स्टाइन के अनेक स्थानों, यहूदी राजाओं का वर्णन है। कुरान में भी अरब देश और मुहम्मद साहिब का वर्णन है।

इसके अतिरिक्त वेदों में सृष्टि क्रम के विरुद्ध कोई वर्णन नहीं है। वहीं बाईबल में कुमारी मरियम से (बिना पुरुष संयोग से) ईसा–मसीह का जन्म, ईसा द्वारा मुर्दों को जीवित कर देना, अन्धों की आँखें ठीक कर देना, आदि का वर्णन है। कुरान में भी इसी प्रकार पहाड़ बादलों की तरह उड़ते हैं। फरिश्ते आसमान में, तो खुदा सातवें आसमान पर, स्वर्ग (बहिश्त) में दूध और

शेष पृष्ठ 05 पर

स्वतन्त्रता दिवस

● भद्रसेन

यह शास्त्री प्रथम वर्ष की कक्षा है। इस समय चतुर्थ पत्र का क्रम है। इस कक्षा के चतुर्थ पत्र में हिन्दी, पंजाबी या अंग्रेजी भाषा का पाठ्यक्रम निर्धारित है। इस समय यहाँ सभी विद्यार्थी हिन्दी भाषा वाले हैं। जब प्राध्यापक महोदय ने कक्षा में प्रवेश किया, तो सभी विद्यार्थियों ने उठकर प्राध्यापक महोदय का अभिवादन किया। उपस्थिति लेने के पश्चात, गुरुजी ने कहा– इस पत्र में कविता, उपन्यास, नाटक हिन्दी भाषा के इतिहास के साथ निबन्ध भी निर्धारित हैं। आज (14 अगस्त) निबन्ध का क्रम है। अतः आज हम कल के स्वन्त्रता दिवस पर ही विचार करेंगे।

सौरभ– गुरु जी! पहले इसी शब्द पर ही प्रकाश डालने की कृपा करें।

प्राध्यापक– ठीक है। स्व और तन्त्र इन दो के मेल से स्वतन्त्र शब्द बनता है। इसके साथ ता प्रत्यय लगकर स्वतन्त्रता शब्द पूर्ण होता है। अतः इसमें स्वः+तन्त्र+ता इन तीनों अशों का मेल है। स्व का अर्थ है– अपना, तन्त्र का अर्थ है इच्छा, शास्त्र और ता= भाव, पने अर्थ में आता है।

अर्थात् अपनी इच्छा, अपने शास्त्र= संविधान का भाव, पना। यही भाव स्वाधीनता का भी है और इस में स्व+अधि+इन (स्वामी)+ता का मेल है, अर्थात् अपना स्वामीपन, अपना मालिक आप होने का भाव। इसी अर्थ में स्वराज्य शब्द भी लिया जा सकता है। इसी में उर्दू में आज़ादी शब्द से पुकारा जाता है। पर स्व+तन्त्र का अपना भाव यही है, कि अपनी व्यवस्था को स्वयं स्वीकार करना। दूसरे के द्वारा या दण्ड के डर से नहीं। स्वाधीनता का भाव है– अपने आप को मालिक मानकर अपने उत्तरदायित्व को स्वयं स्वीकार करना। नौकर की तरह दूसरे द्वारा हाँका न जाना। इनके विपरीत शब्द हैं– परतन्त्र, पराधीन इनसे भी ऊपर वाला अर्थ भाव स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

सोमेश– गुरुजी! तन्त्र का अर्थ इच्छा के साथ शास्त्र=संविधान, व्यवस्था क्या है। कृपया इसको उदाहरण से समझायें।

प्राध्यापक– तन्त्र=शास्त्र=संविधान व्यवस्था के लिए ही होते हैं। जैसे कि एक स्कूल को चलाने के लिए एक व्यवस्था होती है और व्यवस्था के अनुरूप ही स्कूल की प्रगति या वह चलता है। स्कूल में अध्यापक, छात्र पुस्तक आदि लाते हैं। जिन नियमों से स्कूल चलता है, उसको ही व्यवस्था कहा जाता है। यह व्यवस्था, नियम ही स्कूल का संविधान होता है। यही भाव हर संगठन और देश पर लागू होता है।

गौरव– गुरुजी! हमारे देश के इतिहास साहित्य में इस दिन का जो विशेष गौरव है। उस पर भी कुछ प्रकाश डालें, तो 'सोने में सुहागे' वाली बात होगी।

प्राध्यापक– हाँ, जैसा कि आप सब अच्छी प्रकार से जानते हैं, कि अपना देश सैंकड़ों वर्ष पराधीन रहा है। पराधीनता के पहले दिन से ही अपनी गुलामी की जंजीरों को काटने के लिए भारतीय किसी न किसी रूप में जूझते रहे हैं। लाखों के अनेक तरह के बलिदानों, करोड़ों के बहुत तरह के कष्ट सहने के बाद 15 अगस्त 1947 को जैसे–कैसे रूप में भारत स्वतन्त्र हुआ। जिस ने भी जितनी ईमानदारी के साथ जितना इसके लिए संघर्ष किया, वह तदनुरूप हमारे सम्मान और गौरव का पात्र है।

सौरम– स्वाधीनता और संघर्ष का आपस में क्या सम्बन्ध है? तथा इसकी संक्षिप्त कहानी क्या है?

प्राध्यापक– सब जीने की इच्छा जहाँ करत्ते हैं, वहाँ अपनी इच्छा के अनुसार ही जीना चाहते हैं और उसी में अपना सम्मान मानते हैं, अन्यथा पिंजरे वाले की तरह छट–पटाते हैं। अपनी इच्छा का नाम ही स्वाधीन, स्वतन्त्र, स्वराज्य है। इसीलिए ही सभी भाषाओं के साहित्य में स्वतन्त्र आदि भावों की गरिमा जहाँ मिलती है, वहाँ एतदर्थ सदा सजग रहने का संदेश भी मिलता है। अतः स्वाधीनता की भावना स्वाभाविक है और इसीलिए ही कहा जाता है, कि 'स्वाधीनता हमरा जन्मसिद्ध अधिकार है'। जब कभी जहाँ–कहीं जिस किसी रूप में पराधीनता की बात होती है, तभी स्वाधीनता प्रेमी अन्तिम साँस तक उस पराधीनता से टक्कर लेने के लिए हर कोशिश करते हैं। स्वाधीनता प्रेमियों ने हर बलिदान देकर भी इस स्वाधीनता की ज्योति को बुझने नहीं दिया।

मध्य युग में भारत जब मुस्लिम पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा, तब राणा सांगा, राणा प्रताप और शिवाजी आदि के रूप में यह स्वाधीनता संग्राम सदा चलता रहा। ऐसे ही अंग्रेजों की गुलामी में जकड़े जाने पर कभी मंगल पांडे के रूप में, तो कभी रानी झाँसी, तात्यां टोपे, कुँवर सिंह आदि नेताओं के नेतृत्व में 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम छिड़ा और यह संग्राम भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आदि क्रान्तिकारियों की सहस्त्र के रूप में 1946 तक और जल सेना विद्रोह तक चलता रहा।

सशस्त्र क्रान्ति के साथ 1917 से महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अहिंसात्मक सत्याग्रह आदि के रूप में एक बड़ी धारा और आकर जुड़ गई। उस समय तक स्वाधीनता संग्राम कुछ युवकों या नेताओं तक ही सीमित था, पर महात्मा गाँधी के साथ यह जनता का आन्दोलन बन गया।

सोमेश– गुरु जी! इसका यह भाव हुआ कि स्वाधीनता के महत्त्व की दृष्टि से यह सब स्वाभाविक हो जाता है।

प्राध्यापक– यह तो बिल्कुल स्पष्ट बात है, कि स्वतन्त्र, स्वाधीन व्यक्ति एवं देश का ही सर्वत्र सम्मान होता है। सभी उस का आदर करते हैं। इतिहास इसका साक्षी है, कि पराधीन का सदा हर प्रकार से अपमान होता है, और तो क्या पराधीन की मिट्टी के खिलौने से भी कम कीमत होती है। वह सब स्थानों पर सदा ही दुत्कारा जाता है। अपने देश और सभी गुलाम देशों के इतिहासों के पन्नों पर पन्ने भरे पड़े हैं, कि कौन–सा ऐसा कष्ट और अपमान नहीं था, जो उन्होंने न सहा हो।

वैसे गुलामी का एक सुन्दर–सरल सा उदाहरण है– कैदी का जीवन। जेल में जीने की सारी जरूरतें मिलती हैं, और उसके ऊपर इनकी अपनी कोई जिम्मेवारी नहीं होती। केवल सम्मान और अपनी इच्छा की बात नहीं होती। इसीलिए कोई भी स्वाभाविक जेल जीवन को पसन्द नहीं करता।

सर्वेश– साहित्य की दृष्टि से भी इस पर कुछ चर्चा हो तो और अच्छा है।

प्राध्यापक– हाँ, हमें अपने पाठ्यक्रम के इस पहलू से भी इस पर विचार करना चाहिए। **साहित्य** की आँख हर क्षेत्र में राह दिखाती है। जैसे शब्द– अर्थ के सुन्दर साथ पाने के कारण ही उसको साहित्य कहा जाता है। संसार के पुस्तकालय की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद ही है। वेदों में यत्र–तत्र स्वराज्य की चर्चा मिलती है। अतएव एक **स्थल** पर कहा है– **'तत्स्वराज्य नियाय, यस्मान्यान्यत्म्नास्ति किञ्चित्'** अथर्व 10,6,31 अर्थात् स्वराज्य सबसे बड़ी निआमत है और तभी तो ऋग्वेद के 1,80 सूक्त में 16 बार एक टेक अर्चन **ननु** स्वराज्यम् (अर्थात स्वराज्य की अर्चना करते हुए) आई है। एक और मन्त्र में कहा गया है– 'यतेमहि स्वराज्ये' 5,66,6 हम स्वराज्य के लिए सदा यत्नशील रहें। हाँ, 1,80 सूक्त के हर शब्द को समन्वित कर सकना कठिन हो, पर 5,99,9 के व्यचिष्ठे बहुपाय्ये, विशेषण बहुत ही विचारणीय हैं। सुरक्षा और आर्थिक विकास, स्वावलम्बीपन ही स्वराज्य को स्थायी बना सकते हैं। इन दोनों के बिना स्वराज्य जल्दी डगमगा जाता है।

वेद के भावों को लेकर मनुस्मृतिकार ने बहुत ही स्पष्ट कहा है– (क्योंकि यह वेद को समझाने का सुन्दर प्रयास है।)

सर्वं परवशं दुःखम्, सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विघात् समासेन लक्षणं सुख दुःखयोः।।

अर्थात् जो कुछ पर वश है, वह दुख रूप है और जो स्ववश है, वह सुख रूप है और यही सुख–दुख की सीधी–सी पहचान है। तभी तो कहते हैं– 'पराधीनं सपनेहु सुख नां ही'– तुलसी। ऐसी ही चर्चा अन्य साहित्य में भी आती है। मेरे विचार से हृदयंगम करने की दृष्टि से आज इतना ही पर्याप्त होगा।

182– शालीमार नगर
(होशियारपुर) 146021

शेष पृष्ठ 04 का ☞

भारतीय संस्कृति बनाम ...

शहद की नदियों का बहना लिखा है। उन्हीं से प्रभावित हो शायद हमारे पुराणों में भी वृतान्त दिए गए हैं– अगस्त्य ऋषि ने पूरा समुद्र पी लिया, हनुमान जी सूर्य को निगल गए, और न जाने क्या–क्या कल्पना। क्या यही है हमारी संस्कृति, भारतीय संस्कृति, वैदिक संस्कृति, विश्ववारा संस्कृति? कदापि नहीं। हम भ्रमित हो रहे हैं। विकृत सभ्यताओं के प्रभाव में आज मूर्ति पूजक भी हिन्दू हैं, मूर्ति पूजा के खण्डन करने वाले भी हिन्दू, मांसाहारी भी हिन्दू, शाकाहारी भी हिन्दू, कबरों–मजारो को पूजने वाले भी हिन्दू, पाश्चात्य परम्पराओं को पोषण करने वाले भी हिन्दू। तो क्या ये सभी वैदिक संस्कृति के रक्षक हैं? भारतीय संस्कृति तो अब चूँ चूँ का मुरब्बा बन गया है। न परम्पराओं का पालन, न वेद मार्ग का पालन, न हमारी भाषा, न भूषा, न भेषज। क्या हम गर्व करें इस मौजूदा संस्कृति पर? जिसे भारतीय संस्कृति का, धर्म निरपेक्षता का, आधुनिकता का नाम दिया गया है। कदापि नहीं, यह हमारी संस्कृति नहीं। आज नितान्त आवश्यकता है वेदमार्ग के अनुसरण का, वैदिक संस्कृति को पुनर्जीवित करने का। वेद का आदेश है तीन देवियों का आदर करना ताकि वे घर घर को प्रकाशित करे। इड़ा (प्रशंसनीय संस्कृति) सरस्वती (वाणी, मातृभाषा) और मही (पूजा योग्य मातृभूमि)

इड़ा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदनवस्त्रिधः। ऋग् 1/13/9

गली मास्टर मूलचन्द वर्मा
फाजिलका–152123 (पंजाब)
मो. 9217832632, 7009822720

वृक्षों की उपयोगिता

● डॉ. बृहस्पति मिश्र

ऋग्वेद के प्रसिद्ध अरण्यानी सूक्त में – बहुत समृद्ध और विशाल विकसित वन की तुलना धन धान्य से सम्पन्न घर से की है–

उत गाव इवादन्त्युत वेश्मेव दृश्यते।
उतो अरण्यानिः सायं शकटीरिव सर्जति।।

ऋ. 10।146।2,3

"यह महावन गौ आदि पशुओं के निर्भयता पूर्वक चरने से, लता गुल्म आदि से सुन्दर घर के समान लक्षित हो रहा है। इस वन से फल, पत्तियों, काष्ठादियों से भरी गाड़ियाँ सायंकाल में निकल रही हैं जैसे कि वन ने यह उपहार में दिए हों।" जिस प्रकार घर से कोई सदस्य कार्यवश बाहर जाता है तब उसे उपयोग हेतु बहुत सारा सामान (पाथेय) साथ में दिया जाता है।

आगे इसी सूक्त में महावन को माता की समानता दी है–कस्तूरी एवं वृक्षोत्पन्न सुगन्धित द्रव्य और बहुत फलादि अन्नों को (बिना कृषकों के परिश्रम से) देनेवाली (मृगोपलक्षित) सम्पूर्ण प्राणियों की माता के समान महावन की मैं प्रशंसा करता हूँ। ऋ. 10।146।2,3 यह महावन किसी को भी कष्ट नहीं देता है अपितु इसके निकट मनुष्यादि प्राणी स्वादु पौष्टिक फलों को खाता हुआ यथेच्छ सुख का उपभोग करता है। आगे वन में पक्षियों, क्षुद्र कीटों की ध्वनि की शास्त्रीय संगीत से तुलना की है–

वृषारवाय वदते यदुपावति चिच्चिकः।
आघाटिभिरिव धावयन्नरण्यानिर्महीयते।।

ऋ. 10।146।2,3

"झंकार करनेवाले झींगुर और चीं–चीं करते हुए जन्तु आदि की ध्वनि से ऐसा प्रतीत होता है मानो निषादादि सप्तस्वरों का ज्ञाता वीणा के तारों से संगति मिलाने का प्रयास कर रहा है।"

ये वन मनुष्यों एवं पशुओं के साथ पक्षियों के भी आश्रयस्थल हैं। ऋ. 10।21।1 इसीलिए ऋषियों ने आदेश दिया है कि वृक्ष औषधि आदि को नहीं काटना चाहिए।

"मा काकम्बीरमुद्वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि हि नीनशः।"

ऋ. 6।48।17, ऋग्वेदभाष्य–स्वामी दयानन्द सरस्वती

किसी भी मनुष्य को श्रेष्ठ वृक्ष या वनस्पति नष्ट नहीं करनी चाहिए। तदेव

"पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हिंसिषम्।।"

यजु. 1।25

"हे देव यज्ञजनस्थलि पृथिवी मैं तेरी औषधियों को समूल नष्ट न करूँ।" ऋग्वेद में इन्द्र से प्रार्थना है कि वनों को वृक्षों से विमुक्त मत करो। ऋ.8।1।13 वेद ने आदिष्ट किया–

"वनस्पतिं वन आस्थापयध्वम्"

ऋ. 10।101।11,

"मापो मौषधीर्हिंसीः...।"

यजु. 6।22

"औषधियों के वनों को नष्ट न करें अपितु वनों में वनस्पति के विकास का प्रयत्न करना चाहिए।" इसी तरह वृक्ष वनस्पति औषधि के बहुत बड़े स्तर पर संहारक आँधी, झंझावात एवं जंगलों की आग–दावानल से वृक्षों एवं वन–महावन की रक्षा करने की ओर भी संकेत प्राप्त होते हैं। ऋ. 5।57।3, 5।60।2, 6।60।10, 5।9।4 क्योंकि वनों में ही स्वस्थ वनस्पति स्वाभाविक रूप में रह सकती है। स्वस्थ वनस्पति ही सम्पूर्ण प्रदूषण को नष्ट करने में समर्थ है। वेद के शब्दों में –

"वनस्पतिः शमिता"

यजु. 29।35,

"वनस्पतिं शमितारम्"

यजु. 28।10

वनस्पति में प्रदूषकों की उग्रता को शान्त करने की सामर्थ्य है। आचार्य यास्क तो औषधि शब्द की निरुक्ति करते हुए स्पष्टतः ऊर्जा का स्रोत एवं प्रदूषण को दूर करनेवाला मानते हैं।

"औषधयः – औषद् धयन्ति, दोषं धयन्तीति वा"।

निरुक्त 9।27

शतपथकार प्रत्येक वृक्ष को जो मनुष्यों के अथवा प्रकृति के (कृत्रिम अथवा प्राकृतिक) दोषों का पान करे– औषधि मानते हैं – **"औषं धयेति तरुः औषधयः सम्भवत्।।"**

शतपथ 2।2।4।5

अद्यत्वे भी रोगों को दूर करने के उपयोग में आनेवाली प्रत्येक वृक्ष वनस्पति को औषधि नाम से अभिहित किया जाता है। अथर्ववेद कहता है कि " जब तक मनुष्य के निकट प्रचुर मात्रा में औषधि, वृक्ष, वनस्पति हैं, तब तक कोई भी रोग, दोष, प्रदूषण हानि नहीं पहुँचा सकता है।"

"न तत्र भयमस्ति यत्र प्रान्पोत्योषधे।।"

अथर्व. 4।11।2

अतः प्रत्येक औषधि, वृक्ष, वनस्पति के महत्त्व को समझकर उसकी रक्षा करते हुए उसे विकसित करना चाहिए। तभी वनों की रक्षा सम्भव होगी और वायु–प्रदूषण रहित होगी तथा वे औषधियाँ हमें पवित्र करनेवाली होंगी। इसीलिए मैत्रायणी संहिता करती है– **"वायूगोपा वै वनस्पतयः।"** मैत्रायणी संहिता 3।9।4 **"औषधयो वै पावकाः।"** मैत्रायणी संहिता 1।8।9

शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है– **"जगत्यः औषधयः।"** शतपथ ब्राह्मण 1।2।2।2। अर्थात् संसार की सर्वाधिक हितकारी, औषधियाँ ही होती हैं।

वास्तव में वृक्ष ही वनों के रक्षक हैं, क्योंकि वृक्षों का समूह ही वन कहा जाता है, यदि एक–एक वृक्ष काटते जाएँ तो वन ही नष्ट हो जाता है और यदि एक–एक वृक्ष लगाते जाएँ तो वन बन जाते हैं। (जिस प्रकार दिल्ली में स्मृति वन की योजना में प्रत्येक व्यक्ति अपने इष्टजन की स्मृति में एक वृक्ष लगाता गया और वन विकसित हो गया। इनमें भी कुछ वृक्ष हैं जिनकी ओर वेद ने संकेत किया है। इन से वन वृद्धि शीघ्र होती है। जिनमें पीपल और वट आदि वृक्ष आते हैं। इनमें पीपल का महत्त्व तो जगत्प्रसिद्ध है– यजुर्वेद के भाष्य में प्रसिद्ध स्वामी दयानन्द ने लिखा है– **"सोम–लताद्यायौषधिगणाय वनानां पालकायाश्वत्थप्रभृतये वैद्यकशास्त्रबोधजनितां क्रियां कुरुत।"**

यजु. 10।23 का मन्त्र भाष्य स्वयं वेद ने – **"अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि।"**

अथर्व. 5।4।3 "अर्थात् अश्वत्थ देवताओं=दिव्य शक्तियों का निवास–स्थल है।" जनश्रुति है कि पीपल का पेड़ रातदिन आक्सीजन छोड़ता है, जब कि सामान्य वृक्ष सूर्य के प्रकाश में ही आक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं। सम्भवतः इसीलिए महर्षि वेदव्यास की भी श्रीमद्भगवद् गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण ने विश्व की समस्त वस्तुओं में प्रत्येक में अपनी स्थिति उस वर्ग के सर्वाङ्गीण परिपूर्ण तत्त्व में दर्शाते हुए कहा **"वृक्षाणां अश्वत्थोऽस्मि"**। श्रीमद्भगवद्गीता 10।26

पर्यावरण की नैसर्गिकता को बचाने वाले, प्रदूषण को कम करनेवाले कुछ विशेष वृक्षों के प्रति वेदों में सामान्य से अधिक स्नेह प्रकट किया है। सम्भवतः इसीलिए उन वृक्षों से नामशः प्रार्थना करते हैं कि तुममें हमारे दुःखों कष्टों को नष्ट करने की सामर्थ्य है, अतः तुम इन्हें दूर करो, हम तुम्हें शत शाखाओं से बढ़ाते हैं। इन्हीं में से शमी वृक्ष के लिए कहा है–

" मातेव पुत्रेभ्यो मृड केशेभ्यः शमि।"

अथर्व. 6।30।3

"वृक्षि त्वं शमि शतवल्शा वि रोह"

अथर्व. 6।30।2

''हे शमि वृक्ष जिस प्रकार माता अपने पुत्रों को दुःखों से हटाकर सुखी करती है, उसी प्रकार तुम प्रदूषण से हमें बचाकर सुखी करो।'' हे शमि तुम सैकड़ों शाखाओं वाली होकर बढ़ो।

अजशृंगी– ''त्वया वयमप्सरसो गन्धर्वांश्चातयामहे।
अजशृंङ्ग्यज: रक्षः सर्वान् गन्धेन नाशय।।''?

अथर्व. 4।37।2

'हे अजशृंगी अपनी गन्ध से तुम वायु में और जल में व्याप्त होकर प्रदूषण बढ़ानेवाले राक्षसरूपी जीवों को नष्ट करो।'' इसी प्रकार अपामार्ग का वर्णन है कि उसके माध्यम से विद्वानों ने प्रदूषण रूपी असुरों पर विजय प्राप्त की।

अथर्व. 4।19।4, तैत्तिरीयब्राह्मण 1।7।1।8, शतपथब्राह्मण 5।2।4।14

दर्भ से प्रार्थना है कि–

''स नो यं दर्भः परि पातु विश्वतः''

अथर्व. 19।33।1

''त्वं पुनीहि दुरितान्यस्मत्''

अथर्व. 19।33।3

'हे दर्भ हमारी (चारों तरफ के प्रदूषण से मुक्त करके) रक्षा करो, तुम ही हमारे सभी परम हानिकारक तत्त्वों को दूर करके, हमें पवित्र करो'' वेदों में वर्णित प्रमुख औषधियों के नाम इस प्रकार हैं–सोमलता, अपामार्ग, पाटा, पिप्पली, पृश्निपर्णी, ऋषभ, मधुला, पज्ज, सहस्त्रकाण्ड दश्वृक्ष, आव्रयु, शमी, वरणावती, करीर, पलाश, मदावली, अलसाला, सिलाञ्जाला, नीलागलसाला, गुग्गुल, उदुम्बर, दर्भ, अश्वत्थ, शतावर, अजशृंगी आदि।

वेदों में वन्यजीवन (पावमानी शोधसंग्रह–अप्रैल–जून 97, श्री सोमदेव शतांशु)

इन सभी औषधियों पर भैषज्यशाला में विस्तृत शोध की आवश्यकता है। तभी हम ऋषियों के द्वारा संकेतित जीवनोपयोगी तत्त्व को व्यवहार में ला सकेंगे। इसी तरह हानिकारक जीव जन्तुओं एवं प्रदूषण दूर करनेवाली अन्य औषधियाँ भी हैं–जिनमें तुलसी प्रमुख है इनमें मलेरिया नष्ट करने की अद्भुत शक्ति पहचानी गई। बम्बई के एक प्रसिद्ध पत्र में तुलसी के मलेरिया नाशक गुण के विषय में अंग्रेजों के समय का प्रकरण छपा था। सत्य (मासिक पत्र अंक–4), बम्बई में एंग्लो इण्डियन अधिकारी सरचार्ज वर्डवुड ने टाइम्स में एक पत्र लिख कर प्रकट किया था कि जब बम्बई में विक्टोरिया बाग तथा एल्वर्ट संग्रहालय बनाया गया। तब मजदूर लोगों में मलेरिया फैलने लगा। जब बाग के चारों तरफ तुलसी बोयी गई तब शीघ्र ही मलेरिया नष्ट हो गया। अग्निहोत्र– श्री देवराज विद्यावाचस्पति, इसीलिए औषधि को माता के समान सुख कारक कहा है–

औषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुपब्रुवे।।

यजु. 12।78

वनस्पतियों, औषधियों को विकसित

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष– (15 अगस्त)

असली देश की आज़ादी को भुलाकर बर्बादी की तरफ क्यों जा रहे हैं?

● देशबन्धु

समस्त हिन्द देशवासी 15 अगस्त 2018 को देश की "स्वाधीनता दिवस" की 72वीं वर्षगाँठ मनाने जा रहे हैं। जो बड़ी खुशी व गर्व की बात है। मैं इस शुभ एवं राष्ट्रीय पर्व पर समस्त देश–विदेश में रहने वाले भारतवासियों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ। मेरे प्यारे देशवासियों याद रहे कि आज के दिन हम सब आर्यवत वासी खुले आसमान के नीचे विदेशी शासकों की लम्बी व कड़ी गुलामी से मुक्ति पाकर सुख व चैन की साँस लेकर आनन्दपूर्वक जी रहे है। यह सब किसकी बदौलत? इस सम्बन्ध में जरा गंभीरतापूर्वक सोचने व समझने की जरूरत है। इस अखण्ड भारत को देशी विदेशी शासकों की गुलामी से छुटकारा कैसे मिला? इसके लिए हमारे देश को अपार अमूल्य कीमत यानी अनेकानेक क्रांतिकारी देशभक्त, राष्ट्रवादी सपूतों, महापुरुषों, ऋषि, मुनियों, राजनेताओं के अलावा लाखों लोगों की कुर्बानियाँ देकर चुकानी पड़ी। याद रहे आज़ादी की लड़ाई सन् 1857 में शुरू हुई व पंजाब के अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल आयोजित सम्मेलन में जहाँ पर हजारों व लाखों लोग शामिल थे। वहाँ पर ब्रिटिश शासन के मुखिया जनरल डायर ने अपनी फौज द्वारा आदेश देकर निहत्थे हजारों लोगों की गोलियों से भूनकर अपार खून की नदियाँ बहा दी, जिसमें बच्चे, बूढ़े, जवान पुरुष, महिलाएँ सभी शामिल थे। जो देश की आजादी प्राप्ति के लिए एक सबसे बड़ी कुर्बानी व शहादत स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में मानी जाती है। सच पूछे तो हमारे देश को विदेशी दासता से मुक्ति लम्बे वक्त तक कड़े संघर्ष व क्रांतिकारी आन्दोलन के द्वारा अनेक कुर्बानियाँ देने पर हासिल हुई। देश की आजादी की प्राप्ति के बाद बीते जो 72 वर्ष पूरे हो गए इन बीते वक्त के दौरान आधुनिक भारत देश की दशा व दिशा चिन्ताजनक हालत में देखकर उसको गंभीरतपूर्वक सोचना पड़ता है कि ऐसी देश की आन्तरिक व बाहरी दुर्दशा क्यों हुई? क्यों हम देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारी कीमत अदा करने पर भी असली आजादी से हम काफी दूर होते जा रहे हैं? इसमें कोई शक नहीं कि हमारे भारत देश को विदेशी शासकों की पराधीनता से मुक्ति पाए हुए 72 वर्ष बीत चुके हैं। लेकिन हैरानी की बात तो यह है कि देश की आजादी के इतने समय में जो तस्वीर (दशा) सर्वश्रेष्ठ व स्वदेशीपन भारतीय संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, नैतिकता, अनुशासन व राष्ट्रीय सच्चरित्र की तरफ अग्रसर होनी चाहिए थी। वह दुर्भाग्य से आज बिल्कुल खत्म हो चुकी है। याद रहे 15 अगस्त 1947 के बाद आज आर्यवत देश के सामने इतनी गंभीर चुनौती भरी राष्ट्रीय समस्याएँ उजागर हो चुकी हैं, जिनका समाधान अब तक हो जाना चाहिए था लेकिन बेहद अफसोस इस बात का है कि बेहद कमजोर नेतृत्व, निजी स्वार्थ और भ्रष्टाचार के कारण समाधान करने में नाकाम सिद्ध हुआ। आज देश की युवा पीढ़ी नशीले पदार्थों, दूरदर्शन, चलचित्रों, इन्टरनेट व मोबाइल वटसअप फोनों पर अश्लील फिल्मों, नाटक, विज्ञापन व फेसबुक पर दोस्ती जैसी घातक विनाशकारी बुराइयों का शिकार होकर समाज, देश व राष्ट्र में उज्ज्वल भविष्य के बनाने के मार्ग से काफी दूर तक पहुँच गई है। भारत के प्राचीन गौरव के समीप पहुँचना अब विदेशी पश्चिमी सभ्यता का शिकार होकर बहुत ही असंभव दिखाई देता है। यह सब सत्ताधारी केन्द्र सरकार की गलत नीतियों का परिणाम है। भारतीय संसद में अनुशासनहीनता, चरित्रहीनता, नैतिकहीनता का बोलबाला होने से लोकतंत्र के भविष्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। जब संसद में नेता, मंत्री, विधायक, भ्रष्ट, अपराधी, आचारहीन होंगे तो समाज, देश व राष्ट्र की क्या दशा होगी? इससे अनुमान लगाया जा सकता है। आज स्वतंत्र भारतदेश में राष्ट्रीय समस्याएँ गंभीर रूप धारण करके देश की स्वतंत्रता, अखण्डता, एकता व संप्रभुता को खुली चुनौती दे रही हैं। हमारे सत्ताधारी व विपक्षी दल के सभी राजनेतागण इस तरफ ध्यान देने की बजाय मौजमस्ती व सत्ता का सुख लेने में व्यस्त हैं। अधिकांश राजनेताओं ने देश में विभिन्न क्षेत्रों में लाखों, करोड़ों रुपयों के घोटाले करके देश को कंगाल बनाकर रख दिया है तथा देश की अर्थव्यवस्था को भ्रष्ट राजनेताओं व सरकार की गलत नीतियों ने इस हद तक क्षति पहुँचाई है कि 'सोने की चिड़ियाँ' कहलाने वाला भारत देश विदेशी कर्जदार बन चुका है। कितने दुःख, शर्म व चिन्ता की बात है? देश में कानून व्यवस्था चरमरा चुकी है। जनजीवन असुरक्षित है। बच्चे, बुर्जुग, लड़कियाँ व महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं। चोरी, डकैती, लूटपाट, रोजगार के नाम पर जालसाजी, अपहरण, फिरौती, भिक्षा–छेड़छाड़, बलात्कार, विरोध पर हत्याएँ इत्यादि आम घटनाएँ हो चुकी हैं। सड़क दुर्घटनाएँ, रोजगार के नाम पर बोगस विज्ञापनों से बेरोजगार लोगों को चुना लगाना, अवैध निर्माण का होना इत्यादि।

राष्ट्रीय समस्याओं में प्रमुख, देश में बड़े पैमाने पर बढ़ती आबादी, युवावर्ग मे बेरोजगारी, निरक्षता, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता, नैतिकपतन, भिक्षा–प्रवृत्ति, बालमजदूरी, मजदूरों, कर्मचारियों का शोषण, नक्सलवाद, आतंकवाद, आर्थिक असमानता, साम्प्रदायिकवाद, धार्मिक कट्टरता, राजनीति में अपराध, कमजोर, पंगु भारतीय संविधान सब घातक समस्याएँ हमारे स्वच्छ देश के विकास में बाधक बन रही है। वास्तव में देखा जाए तो देश को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए जिस तरह से निष्ठा व ईमानदारी, चरित्र, मर्यादा और निपुणता की जरूरत होती है, वो आज हमारे देश के राजनेताओं में बिल्कुल भी नहीं है, जिसके कारण स्वतंत्र भारतदेश अपनी स्वदेशी पहचान व आजादी का सदुपयोग कर स्वतंत्र हिन्द देश की पहचान व शान दुनियाँ में कायम व मजबूत बनाने में असफल सिद्ध हो रहा है। कारण अनेक घातक बाधाएँ हैं। सच पूछे तो आज देश को स्वदेशी हिन्दराष्ट्र मजबूत व खुशहाल बनाने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, लौहपुरुष सरदार पटेल, लाला लाजपतराय, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, दामोदर वीरसावरकर, डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी विरजानन्द, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, छत्रपति शिवाजी, मंगलपांडे, तांत्या टोपे, समाज सुधारक राजा राममोहन राय, पंडित गणेशशंकर विद्यार्थी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, डॉ. रविन्द्रनाथ टैगोर, मुंशी प्रेमचंद, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, माखन लाल चतुर्वेदी व अन्य अनेक महापुरुषों व वीर अमर शहीद सपूतों की जरूरत है। आज हमारे देश के बच्चों व युवापीढ़ी को ऐसे महान नेताओं व महापुरुषों के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए ताकि वे ऐसे देशभक्त, राष्ट्रवादी, चरित्रवान, लौहपुरुष देश के महान कर्णधार बनकर अखण्ड भारत देश की नाजुक आन्तरिक व बाहरी दशा व दिशा को परिवर्तन करके व्यापक सुधार लाकर अखण्ड हिन्द देश की शान, मान, बान, व पहचान को कायम कर सकें। देश को विदेशी ताकतों से मिली गंभीर चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए किसानों व सीमाओं पर भारतीय जवानों को बेहतरीन सुविधाएँ, वेतन भत्ते व अन्य सुरक्षा सम्बन्धी शैन्य शक्ति को बढ़ावा देने में विशेष ध्यान देते रहना चाहिए। इन सब का सुचारू रूप से पालन करने से हमारा भारत देश वास्तव में स्वतंत्र देश कहलाएगा। तथा सही मायने में स्वतंत्रता का उपयोग कर सकें। आइए हम सब देशवासी आजादी के दिवाने क्रांतिकारी अमर शहीद सपूतों व महापुरुषों को उनके आदर्शवादी सिद्धांतों पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करें।

आजादी के अमर शहीद सपूतों, जवानों व महापुरुषों को शतशत् प्रणाम।

जय हिन्द, जय हिन्दुस्तान!

पी2–127, संतोषपार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली–55

यह समत्व की 'योग' कहाता सबको हिलमिल रहना है

धरती हमको भोजन देती
पानी प्यास बुझाता है;
प्राणवायु नित जीवन देती
सूरज शक्ति–प्रदाता है।
चहूँ ओर आकाश व्याप्त है
स्वतंत्र होकर हम रहते;
इक–दूजे से मिल जुलकर ही
मन की बातें हम कहते।
'आज़ादी! आज़ादी!!' कहकर
कुछ लड़के चिल्लाते हैं;
पता नहीं उनको 'आज़ादी'
वे बहकाये जाते हैं।
सर्वधर्म समभाव यहाँ है
सभी योग्यता से बढ़ते;
अपनी–अपनी शक्ति लगाकर
उन्नति की सीढ़ी चढ़ते।
यह समत्व की 'योग' कहाता
सबको हिलमिल रहना है;
अपना–अपना कर्म करें हम
फिर सुख का क्या कहना है!

मोहन उपाध्याय
26/117, विकासपुरी, क्रिश्चियनगंज
अजमेर–305001 (राज.)
दूरभाष– (0145) 2629959

मुस्लिम "स्तानों" के बीच धर्मनिरपेक्ष "हिन्दुस्तान"

● हरिकृष्ण निगम

दुनिया भर में आज लगभग 45 से अधिक छोटे–बड़े मुस्लिम देश हैं उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनकी पहचान उनके "स्तान" कहलाने से जुड़ी है जैसे पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, उज़बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, आदि, आदि। पर इतिहास के मध्ययुग से आज तक एक अनूठा "स्तान" सारे विश्व में प्रसिद्ध 'हिन्दुस्तान' कहलाने वाला देश है जहाँ हिन्दू तो बहुसंख्यक हैं पर वे अपने को धर्मनिपेक्ष का लेबिल देना अधिक पसंद करते हैं। यह विकल्प उनकी राजनीतिक मजबूरी देश विभाजन के बाद से ही बन गया था। दूसरी ओर विश्व की सर्वाधिक इस्लामी जनसंख्या वाले देश 'इण्डोनेशिया' या 'बांग्लादेश' जिनके नाम के उच्चारण मात्र से किसी इस्लामी स्तान का बोध न कराकर क्रमशः भौगोलिक या भाषायी अस्तित्व को ही परिभाषित करते हैं।

इसी तरह पश्चिमी एशिया में दो देश हैं, आर्मीनिया और अज़रबेज़ान एक ही राजधानी है येरेबान जो ईसाई बहुल है और दूसरे की बाकू जो मुस्लिम बहुल है। सोवियत संघ के विघटन के बाद से उन्हें सीमावर्ती क्षेत्रों में युद्ध, संघर्ष व गृहयुद्ध का सामना करना पड़ रहा है। नागोरनी करावास के सीमावर्ती क्षेत्र पर कब्जा करने में पिछले दो दशकों में दोनों देशों के 70,000 से अधिक सैनिक मर चुके हैं। तेल के कुओं वाला पूर्व सोवियत संघ का प्रसिद्ध बामू नगर अमेरिका की भूरणनीति का हिस्सा बन चुका है जहाँ दोनों देशों के बीच वार्ता में वह मध्यस्थता कर रहा है पर उसका झुकाव आर्मीनिया की ओर अधिक है।

जहाँ तक उज़बेकिस्तान का प्रश्न है वह यद्यपि भारत का मित्र देश है पर भारत में हम उसकी याद हाल में एक अजीबोगरीब कारण से फिर कर रहे हैं। वहाँ एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर बुखारा है। दिल्ली की जामा मस्जिद का इमाम बुखारी अपने को उज़बेकिस्तान के सैयद अब्दुल गफूर शाह के वंशज कहते हैं जो बुखारा के रहने वाले थे। तब से उनके सारे वंशज इमाम बुखारी कहलाते हैं और आज भी वे पैतृक सम्पत्ति के रूप में इमाम का पद पाते हैं। भारत की राजनीति में वर्तमान इमाम बुखारी का दबदबा रहा है और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को छोड़कर पहले के सभी प्रधानमंत्री उनके आगे नतमस्तक होते थे। चाहे मुलायम सिंह यादव हों, या लालू प्रसाद यादव और अनेक केन्द्रीय मंत्री या अखिल भारतीय राजनीतिक दलों के नेता हों, हर चुनाव में वे उनके आगे सिज़दा करते दीखते थे। दिल्ली का वफ्फ बोर्ड तो नाम के वास्ते था और उनकी नियुक्ति में वे अप्रासंगिक बन जाता था। वर्तमान अहमद शाह बुखारी आज जीते जी अपने 19 वर्षीय बेटे को उत्तराधिकारी बनाकर एस्म–ए–दस्तर बन्दी कर रहे हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति नवाज शरीफ या अन्य देशों के मुस्लिम नेताओं व मज़हबी मौलानाओं को निमंत्रण भेजा गया है पर शायद उज़्बेकी राष्ट्रपति को इसलिए न आमंत्रण और न ही सूचना भेजी गई कि समय आते आते इमाम बुखारी के क्रम तक उनमें भारतीय खून या डीएनए भिन्न हो गया हो।

पिछली कई शताब्दी में विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं के भारत में कितनी बड़ी संख्या में आज वंशज हैं इसका कोई ब्यौरा या उनकी जनसंख्या के बारे में किसी को अंदाजा नहीं है। फिर भी कोई भारतीय मुस्लिम अपने को खुरासान (ईरान) के तुर्क नादिरशाह का वंशज नहीं कहलाना चाहेगा जिसने दिल्ली में सन् 1739 में नरसंहार कर अपार सम्पत्ति व कोहेनूर हीरा व रत्नजड़ित सोने का तख्तताउस जो ग्वालियर के राजा से हुमायूँ को मिला था और जिसे बाद में मोहम्मद शाह ने नादिरशाह को दिया था।

इसी तरह कदाचित उत्तर भारत में तूफान की तरह रक्तपात करने वाले अहमदशाह अब्दाली का भी कोई वंशज नहीं कहलाना चाहेगा। आधुनिक इतिहास का एक सामान्य विद्यार्थी भी जानता है कि मुग़लों के दरबार में चाहे नवरत्न हों या उनके मंत्री व दरबारी अथवा वरिष्ठ जनरल या सिपहसलारों के पद हों, उनमें चार समूह ही होते थे। पहला समूह ईरानियों का था जो फ़ारस से आए थे, दूसरा तूरसी था जो मध्य एशिया के उज़बेकिस्तान, कज़ाखिस्तान, तांजाकिस्तान से आए थे। उस समय इस सारे क्षेत्र को ट्रान्सओक्सानिया कहा जाता था। तीसरा बड़ा समूह अफगानियों का था जो सिन्धु नदी के पार के विशाल क्षेत्र जो गजनी, कंधार और हिन्दूकुश तक फैला था। चौथा सबसे बड़ा प्रभावशाली वर्ग स्वयं मुगल सम्राट की दृष्टि में "हिन्दुस्तानी" था जिसमें भारतीय मूल के मुस्लिम, राजपूत, राजवंशी, गैर–फ़ारसी, मेवाड़ी, मेवाती, हरियाणवी या अरबी के स्थान पर अवधी, हिन्दी या सेना–शिविरों में उभरती बोलचाल इतिहास में इसी भाषायी समूह पर मुगल बादशाह सबसे अधिक विश्वास करते थे। या इसी जातीय चेतना को भलीभाँति समझने लगे थे।

इस्लामी उत्साह के समुद्री उफ़ान में जनसांखिक परिवर्तनों के कारण हाल की एक रिपोर्ट के अनुसार 21वीं शताब्दी में आज यद्यपि कुल मिलाकर 54 इस्लामी देश हैं पर इनमें से एक भी आधुनिक औद्योगिक देश होने का दावा नहीं कर सकता है और मानव संसाधन के विविध सूचकांकों पर वे सभी पिछड़े देशों की श्रेणी में आते हैं। वाशिंग्टन स्थित पिव रिसर्च सेन्टर फ़ोरम आन रिजिजन एण्ड पब्लिक लाइफ के एक शोध के अनुसार विश्वभर में 2010 में जो मुस्लिम जनसंख्या थी उसकी 5 बिलियन उसमें सन् 2030 में इतनी वृद्धि होगी कि यह 6 बिलियन से अधिक पहुँच सकती है। उनकी वृद्धि दर चौंकाने वाली है। सिवाय अल्बानिया और कोसोबो जो योरोप में स्थित है, मिश्र, नाइजीरिया, ईरान, तुर्की, अल्जीजिरया, मोरक्को, बांग्लादेश, पाकिस्तान, इंडोनेशिया और भारत सभी जगह मुसलमानों की वृद्धि दर अभूतपूर्व है। इथोपिया, तंजानिया, आइबरी कोस्ट, मोजाम्बीक, नाइजर, सूडान, चाड, जिबूती, सियरा, नियोन, बुरकोना, फासो, किर्गीस्तान, तंजाकिस्तान, सोमालिया आदि अनियंत्रित मुस्लिम जनसंख्या के बीच केवल तंजाकिस्तान के राष्ट्रपति एमोयली राखमन बाज शायद पाशा कमाल अटातुर्क (1923 से 1938) के बाद पहले राष्ट्रपति हैं जो अपने देश को कट्टरपंथियों को जनसंख्या विस्फोट के खतरों से लगातार चेतावनी दे रहे हैं।

आज सारे विश्व में धर्मावलम्बियों की संख्या की राजनीति बहुत महत्त्वपूर्ण हो चुकी हैं जहाँ एक ओर इस्लाम विरोधी पश्चिमी उफ़ान के कारण आतंकवाद को मुस्लिम आस्था से खुलकर जोड़ा जा रहा है, दूसरी ओर वेटिकन और अन्तर्राष्ट्रीय चर्चों की धर्मान्तिरण की रणनीति भी इन्हीं आंकड़ों पर तय होती है। योरोप और अमेरिका में श्वेत जनसंख्या घटने से पश्चिमी अर्थशास्त्री मुस्लिम प्रजनन–क्षमता पर चिन्ता प्रकट कर रहे हैं। लंदन में योरोपीय संघ के आयुक्त फ्रिट्ज बोलकेस्टीन ने कुछ दिनों पहले लीडस विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए यहाँ तक कह डाला कि वह समय दूर नहीं जब योरोप में इस्लाम ईसाई धर्म को पीछे धकेल देगा। तुर्की के 7 करोड़ से अधिक मुस्लिम योरोपीय संघ के नए प्रावधानों के कारण फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैण्ड्स, बेल्जियम आदि क्षेत्रों में अपनी बढ़ी प्रजनन दर द्वारा पूरे योरोप का चेहरा ही बदल सकते हैं। 'जनसंख्या बम' का विस्फोट भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नाईजीरिया, इंडोनेशिया व चीन में हो रहा है। जब कि योरोपीय देश व आस्ट्रेलिया व अमेरिका आदि सन्तान पैदा करने के देशभक्ति के कार्य में पिछड़ गए हैं।

आज दुनिया भर में जहाँ लगभग 200 करोड़ (दो बिलियन) ईसाई हैं, मुस्लिमों की जनसंख्या लगभग 150 करोड़ (1.5 बिलियन) है। यहूदियों की जनसंख्या सेमिटिक धर्मों की अपेक्षाकृत मात्र 5 करोड़ है और हिन्दुओं की कुल जनसंख्या 100 करोड़ (1 बिलियन) से भी कम है। यद्यपि इस्लाम को मध्यपूर्व का धर्म माना जाता है पर विश्व के सर्वाधिक मुस्लिम एशिया में रहते हैं। जहाँ उत्तरी अमेरिका में 6 मिलियन, लातिनी अमेरिका में 1.5 मिलियन और योरोप में 45 मिलियन मुसलमान हैं, अफ्रीका के देशों में इस समय 32 मिलियन मुसलमान हैं। आज कुल मिलाकर 60 देश ऐसे हैं जहाँ मुस्लिम बहुमत में हैं और जिन्हें "पेट्रो डालर" के लाभार्थी होने के कारण राजनीतिक रूप से सन्देह के घेरों में रखा जाता है। व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से इस्लाम को खुलकर जोड़ने के बावजूद भी इसके बढ़ते वर्चस्व से उदारवादी विश्व चिन्तित है क्योंकि उन्हें मुख्यधारा से कटी अघुलनशील जनसंख्या माना जाता है। पर शायद भारत में इस प्रकार के कड़वे सच के विमर्श को राजनीतिक रूप से अनौचित्यपूर्ण माना जाता है।

ए–पंचशील हाईट्स
महावीर नगर कांदिवली
(प.) मुम्बई

☞ पृष्ठ 02 का शेष

बोध कथाएँ...

सूरदास ने विनयपूर्वक पूछा– "कौन–सा द्वार?"

उस व्यक्ति ने कहा– "वह सामने वाली दीवार में है, परन्तु बहुत दूर। तुझे दिखाई देता नहीं। इधर से उस द्वार तक पहुँच न पायेगा। मेरे साथ आ। मैं तेरा हाथ इस दीवार पर रख देता हूँ। इसको छूता हुआ चला जा। जहाँ खुला द्वार आयेगा, वहाँ से बाहर चले जाना।"

उस व्यक्ति ने सूरदास का हाथ रख दिया दीवार पर। सूरदास चलने लगा। परन्तु उसे खुजली की बीमारी थी। बार–बार खुजली उठती। वह खुजलाता और चलता जाता। वह वह खुले द्वार के पास पहुँचा तो पुनः खुजली जाग उठी। दीवार से हाथ उठाकर वह खुजाता हुआ बढ़ गया। फिर 84 लाख द्वारों के चक्र में पड़ गया।

आपको इस बेचारे सूरदास पर दया आती है। मन–ही–मन आप सोचते हैं, कितना अभागा है वह! परन्तु सोचो मेरे भाई! क्या आप स्वयं पर दया नहीं कर सकते? अरे, हम भी तो उस सूरदास की भाँति हैं। 84 लाख योनियों के चक्र में पड़े हैं 84 लाख बन्द हैं यहाँ। दुःखों–कष्टों की अग्नि जल रही हैं यहाँ। पाप–ताप के पशु दहाड़ रहे हैं। केवल एक द्वार खुला हैं– यह मानव–योनि। किसी ज्ञानी ने कृपा करके कहा– "इस द्वार से बाहर निकल जाओ।" परन्तु हाय रे अभागे! इस खुले द्वार के समीप पहुँचकर तेरे अन्दर तृष्णा, विषय–वासना की खुजली जाग उठती है। दीवार से हाथ उठाकर तू खुजलाने लगता है। खुजलाता हुआ आगे बढ़ जाता है और फिर वही 84 लाख का चक्कर!

उस बेचारे अन्धे पर दया करते हो, अपने–आप पर नहीं कर सकते? कब तक भटकते रहोगे इस दुर्ग में, जहाँ दुःख–ही–दुःख हैं– कष्ट ही कष्ट? यह मानव–शरीर तुम्हारे सक्षम है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की खुजली में फँस गये तो द्वार फिर निकल जायेगा और यह निकल गया तो 'महती विनष्टि'– बहुत बड़ा विनाश होगा।

दिन दश के व्यवहार में झूठे रंग न भूल

विदुर एक दिन महाराजा धृतराष्ट्र के पास गये। धृतराष्ट्र बोले– "यह क्या हो गया है दुनिया को?"

विदुर ने कहा– "राजन्! मोह के वशीभूत होकर मनुष्य लोभ, क्रोध और भय से पागल हुआ जाता है, चिन्ता की आग में जला जाता है। जब तक वह लोभ, क्रोध और भय से मुक्ति नहीं पायेगा, चिन्ता की अग्नि समाप्त नहीं होगी।"

एक कहानी सुनाई विदुर जी ने– "एक था घना जंगल। उसमें कितने ही विषैले और भयंकर जीव–जन्तु चिल्लाते फिरते थे– सिंह और हाथी, सर्प और अजगर, चीते और रीछ। अन्धकार था घोर महान् उसके अन्दर। भागता हुआ एक व्यक्ति उसके निकट आया। एक बहुत बड़े शरीर वाली भयानक स्त्री को उसने वहाँ देखा। वहाँ पाँच विषैले सर्प देखे। वह भय के कारण भागा और काँपता–हाँपता जंगल में दौड़ता चला गया। अँधेरे में एक तालाब में गिरा। परन्तु इससे पूर्व कि तालाब की उस तह में पहुँचता, जहाँ पानी नहीं था, किनारे पर लगे एक वृक्ष की शाखा उसके हाथ में गई। उससे लटक गया वह। जब कुछ होश आया तो उसने देखा कि नीचे गहरे तालाब की तह में एक भयानक साँप फन फैलाये बैठा है। उसकी आँखें अंगारों की भाँति चमक रही हैं। ऊपर देखा कि एक छः मुख वाला हाथी उस वृक्ष को गिराने का प्रयत्न कर रहा है जिसकी शाखा से वह चिपटा हुआ था, और यह भी देखा कि श्वेत और काले रंग के चूहे वृक्ष की शाखा को काट रहे थे। ऊपर मृत्यु, नीचे मृत्यु, भय से उसका रोम–रोम काँप उठा, परन्तु तभी वृक्ष की एक अन्य शाखा पर लगे शहद के छत्ते से बूँद–बूँद करके शहर चूने लगा और उसके होंठों पर गिरने लगा। उसने शहद को चखा। उसके स्वाद में खो गया। भूल गया नीचे के सर्प को, छः मुख वाले उस हाथी को जो ऊपर चिंघाड़ता था, उन श्वेत और काले चूहों को जो शाखा को काट रहे थे, उस जंगल में चिल्लाते हुए सिंहों को, फुङ्कारते हुए अजगरों को, शोर मचाते हुए पशुओं को। उस व्यक्ति की भाँति है यह मनुष्य। शाखा से लटका हुआ, शहद के स्वाद में सब–कुछ भूला हुआ है।"

धृतराष्ट्र ने कहा– "यह जंगल क्या है? वह स्त्री क्या है, जिससे डरकर वह भागा?"

विदुर ने कहा– "संसार वह भयानक जंगल है। इसमें रोग, शोक, अग्नि, भूकम्प, बाढ़ और लड़ाई–झगड़े के पशु घूमते रहते हैं। इसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंधकार के सर्प रेंगते हैं। इसमें वह भयानक स्त्री है, जिसे बुढ़ापा कहते हैं। मनुष्य जीवन की जिस शाखा से चिपटा है, उसे दिन और रात्रि के श्वेत और काले चूहे काट रहे हैं। स्वयं शाखा को भी छः ऋतुओं वाला वर्ष हाथी बनकर धक्के मार रहा है। नीचे भयानक सर्प के रूप में मृत्यु प्रतीक्षा कर रही है। इन सबको भूलकर वह अभागा मनुष्य आशा और निराशा के शहद की मिठास में खो गया है। नीचे की मृत्यु और ऊपर का महानाश उसे दृष्टिगोचर नहीं होते।"

कबीरा यह संसार है, जैसा सेमल फूल।
दिन दश के व्यवहार में, झूठे रंग न भूल।।

क्रमशः

☞ पृष्ठ 06 का शेष

वृक्षों की उपयोगिता

करने का ऋषियों का उपदेश विनष्ट होती ऋषि सन्तानों में आशा का संचार करता है–

अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह।
सहस्त्रवल्शा वि वयं रुहेम।।

यजु. 5।43

हे वनस्पति औषधि हम तुम्हारे प्रभाव को जान गये हैं तुम सैकड़ों शाखाओं में बढ़ो, जिससे हम हजारों शाखाओं में विकास को प्राप्त कर सकें।

इसी मन्त्र के भाव को पुराणाकार एक पुत्र से दश गुना अधिक वृक्ष का महत्व के रूप में कहते है **''दशपुत्रसमं तरुः।।** (मत्स्यपुराण) (वृक्ष पर्यायवाची तरु शब्द की अन्वर्थ व्युत्पत्ति तारयति जनान् दुःखसागरात् इति तरुः अर्थात् जो मनुष्यों को (प्रदूषण रूपी) दुःखों से तारण–पार उतारे, की जाती है)

अग्नि पुराण के अनुसार–''यदि कोई व्यक्ति अपने वंश का विस्तार एवं धन और सुख में वृद्धि की कामना करता है तो वह फल–फूलवाले किसी वृक्ष को न काटे।''

वराह पुराण कहती है **''पच्चाम्रवापी नरकं न याति''** अर्थात् पाँच आम के वृक्ष को लगानेवाला कभी नर्क नहीं जाता।

पद्मपुराण के अनुसार–जो मनुष्य सड़क के किनारे छायादार वृक्ष लगाता है वह स्वर्ग में उतने ही समय तक सुख भोगता है जितने समय तक वह वृक्ष फलता–फूलता है।

आधुनिक पर्यावरण समस्या–वैदिक समाधान (शोध संग्रह) श्री भारतभूषण विद्यालंकार

महर्षि व्यास कहते हैं कि वृक्ष वनस्पतियों को कभी नहीं काटना चाहिए, क्योंकि एक पुष्पित फलित वृक्ष से समस्त वन सुवासित हो जाता है जैसे एक ही सुपुत्र से सम्पूर्ण कुल गौरवान्वित होता है।

एतेषां सर्ववृक्षाणां छेदनं नैव कारयेत्।
चतुर्मासे विशेषेण बिना यज्ञादिकारणम्।।
एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुवासिना।
वासितं वै वनं सुपुत्रेण कुलं यथा।।

अतएव ऋषिगण वृक्षों के महत्त्व को समझाते हुए कृतज्ञ मनुष्य से परोपकारी वृक्ष एवम् उनके पालन पोषण करनेवालों के प्रति विनय की अपेक्षा करते हैं–

1. **"नमो वृक्षेभ्यः हरिकेशेभ्यः"** यजु. 16/17
2. **"वनानां पतये नमः"** यजु. 16/18,
3. **"औषधीनां पतये नमः"** यजु.16/19
4. **"वृक्षाणां पतये नमः"** यजु.16/19
5. **"अरण्यानां पतये नमः"** यजु. 16/20

वायु–प्रदूषण के निवारण में वृक्ष वनस्पति का कार्य कुछ–कुछ छलनी जैसा है। जो मनुष्यों के लिए अपेक्षित नहीं है, उसे अपने पास रख लेना और जो उनके हित में है वैसा बनाकर दे देना, किन्तु स क्षात्कृतधर्मा लोकसंग्रहार्थी ऋषियों की अद्भुत प्रजा द्वारा अन्वेषित उपाय–यज्ञ पर्यावरण में इतनी शक्ति का संचार करता है कि जहाँ–जहाँ तक धूम ध्वज यज्ञ का धूम जाता है वहाँ–वहाँ तक प्रदूषण का नामोनिशान नहीं रहता। इसका **प्रत्यक्ष हुआ 2–3 दिसम्बर की मध्य रात्रि 1984 में जब यूनियन कारबाइड फैक्ट्री (भोपाल) में अत्यन्त विषैली एम.आई. सी. गैस के रिसने का प्रारम्भ होने पर श्री कुशवाहा एवं श्री राठौर परिवार ने तुरन्त यज्ञ करना प्रारम्भ किया, जहाँ उस प्रभावित क्षेत्र के सभी मनुष्यों में उल्टी एवं दम घुटने से हायतौबा मची हुई थी, यज्ञ के धूम से 20 मिनट के** अन्दर ही वे दोनों के परिवार का यज्ञ से परिसर गैस के दुष्प्रभाव से मुक्त हो गया। दि हिन्दु (समाचार पत्र–मद्रास), 7 अप्रैल 1985) वायु–प्रदूषण ही नहीं सभी प्रदूषणों से मुक्ति का तात्कालिक एवं दीर्घकालिक सर्वोत्तम उपाय यज्ञ ही है।

वैदिक चिन्तन और आधुनिक पर्यावरण–विज्ञान से साभार

पत्र/कविता

अब भी यहाँ शेष आर्य-संस्कार बने हुए हैं

आज़ादी की लड़ाई से रहे जो दूर–दूर।
आज वे राष्ट्रवाद का ठेकेदार बने हुए हैं।।
सनातन–धर्म–ज्ञान से हैं शून्य जो।
वे सनातन धर्म का पहरेदार बने हुए हैं।।

राम के चरित्र का जिनमें लेश तक नहीं।
वे रामत्व की रक्षा का झंडाबरदार बने हुए हैं।।
गांजा–भांग पी–खाकर नशे में चूर।
हनुमान के जयकार का हिस्सेदार बने हुए हैं।।

राम का भजन और भोजन है रावण का।
सनातन धर्म के कैसे संस्कार बने हुए हैं।।
न चरित्र न मर्यादा, न ज्ञान, न भक्ति।
ऐसे लोग भगवान के अवतार बने हुए हैं।।

लाखों रुपये खर्च करके, बने जो इंजीनियर।
होकर बेरोजगार माँ–बाप पर भार बने हुए हैं।।
अंधेरपुर नगरी चौपट राजा का कमाल।
करोड़पति नेता पेंशन के हकदार बने हुए हैं।।

चरित्र से बना था विश्व–गुरु यह भारत।
बिना चरित्र, लोग देश के कर्णधार बने हुए हैं।।
भारत की नैया होगी कैसे उस पार।
जब नाव में ही छिद्र हज़ार बने हुए हैं।।

मानवता का होगा विस्तार कैसे।
आदमी के बीच मज़हब दीवार बने हुए हैं।।
निराश होने की जरूरत नहीं है 'सूर्य'।
अब भी यहाँ शेष आर्य–संस्कार बने हुए हैं।।

सूर्य देव चौधरी
झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
स्वामी श्रद्धानंद पथ, रांची–1

आर्य महासम्मेलन के आयोजकों को अनुरोधपूर्ण सुझाव

आर्य महासम्मेलन के सभी पदाधिकारियों एवं आयोजकों से अनुरोध है कि आर्य महासम्मेलन के वास्तविक लक्ष्य, सत्य, विश्वास, राजनीति को बढ़ावा देते हुये निम्नलिखित विषयों की चर्चा अवश्य करें एवं इसके क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित योजनाओं एवं सुझावों से देश की जनता एवं शासक वर्ग एवं राजनेताओं को अवगत कराएँ एवं देश की जनता को जागरूक करें तथा **"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः"** वेद मंत्र को चरितार्थ करते हुए भविष्य में देश को सबल एवं सिरमौर राष्ट्र बनाने में अपना योगदान करें।

(1) धर्म, धर्म परिवर्तन एवं धर्म निरपेक्ष इन शब्दों की सही व्याख्या राष्ट्रहित एवं जनहित में करना अति आवश्यक है। चूँकि धर्म का मतलब है कर्तव्य अर्थात् हमारा कर्तव्य संसार के मालिक परमात्मा के प्रति, राष्ट्र के प्रति, आचार्य विद्वानों के प्रति, माता–पिता के प्रति, दूसरे लोगों के प्रति एवं प्राणी मात्र के प्रति क्या होना चाहिये। धर्म को केवल पूजा नमाज तक सीमित रखना सही नहीं है।

उपरोक्त के अनुसार धर्म एक ही है और वह परिवर्तित होता है।

(2) भारत के प्रत्येक नागरिक को चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय मजहब से सम्बन्ध रखता हो एक समान कानून लागू करना मुख्य रूप से परिवार नियोजन यानि एक दम्पति के दो या तीन बच्चे, बहु, पत्नी जैसी कुप्रथा को समाप्त कर एक पत्नी का कानून लागू करना एवं साम्प्रदायिक या शरीयत के आधार पर राष्ट्र के कानून को न मानना अपराध की श्रेणी में रखा जाय तथा उपरोक्त समान कानून व समान आचार संहिता का विरोध करने वाले प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक राजनैतिक पार्टी को सबसे बड़ा साम्प्रदायिक पार्टी करार दिया जाये।

(3) ड्यूटी के दौरान किसी भी व्यक्ति को रोजा नमाज़ के नाम पर, देवी उपासना के नाम पर या अन्य किसी भी पूजा पद्धति के नाम पर समय से पहले ड्यूटी छोड़कर चले जाना एवं राज्य सरकारों द्वारा रोजा एवं देवी उपासना के नाम पर दो–दो घण्टे की छूट देना अनुचित एवं गलत है क्योंकि ईमानदारी से कर्तव्य करना सबसे बड़ा धर्म है।

(4) नमाज़, देवी जागरण या अन्य किसी भी धार्मिक कृत्य के नाम पर सड़क को बाधित करना दण्डनीय अपराध माना जाये क्योंकि इससे जनता को भारी परेशानी एवं असुविधा तथा अनावश्यक विलम्ब जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है।

(5) किसी भी राजनैतिक पार्टी एवं राजनेता द्वारा देश के नागरिकों एवं मतदाताओं को चुनावी सभाओं या अन्य सभाओं सम्मेलनों में मौखिक या निम्नलिखित रूप में धार्मिक एवं पंथिक आधार पर, जाति एवं वर्ग विशेष के आधार पर सम्बोधित न किया जाये, अर्थात हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, जैन, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक, हरिजन, ब्राह्मण, क्षत्रिय, दलित, सवर्ण, आदि अलगाववादी शब्दों का प्रयोग न करके इसके स्थान पर श्रेष्ठ नागरिको, सज्जनो, प्यारे भाइयो, बहनो, बुजुर्गो, माताओ, प्यारे मित्रो आदि जोड़ने वाले शब्दों का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाये। इसका उल्लघंन करने पर राजनेता एवं राजनैतिक पार्टी को अयोग्य करार दिया जाए। राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का पालन करते हुये हम पुनः आर्य महा सम्मेलन के आयोजकों से अनुरोध करते हैं कि उपर्युक्त मुद्दों को प्राथमिकता के तौर पर सम्मेलन में अवश्य सम्मिलित करें।

वेद मन्दिर, सहारनपुर (उ.प्र.)
मो. 9412742557, 7060330830

****

स्वतन्त्रता दिवस की 71वीं वर्ष गाँठ पर

देश को स्वतन्त्र कराने के लिए कई पार्टियाँ प्रयास कर रही थीं। इनमें सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस बनी जिसे बड़ा करने में आर्यों का अभूतपूर्व योगदान रहा जबकि उन्हें राजार्य सभा या हिन्दू महासभा को मजबूत करना चाहिए था। कांग्रेस ने आर्यों को कुछ भी नहीं दिया फिर भी अनेक आर्य अभी भी कांग्रेस में हैं। 1945–46 के चुनावों में गाँधी ने कहा कि वह और नेहरू दोनों हिन्दू हैं और वे हिन्दू हितों का पूरा ध्यान रखेंगे इसलिए हिन्दू महासभा को चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। वीर सावरकर ने कहा कि हिन्दू महासभा को गाँधी पर विश्वास नहीं है इसलिए वह चुनाव लड़ेगी। चुनावों में आर्यों और स्वयं सेवकों की वोटें न मिलने पर हिन्दू महासभा के सारे प्रत्याशी बेशक हार गए फिर भी पार्टी को 16 प्रतिशत वोटें मिलीं।

मुस्लिम लीग की सीधी कार्रवाई से कांग्रेसी नेता घबरा गए। नेहरु और पटेल देश विभाजन पर सहमत होकर गांधी से उनकी स्वीकृति लेने के लिए गए। गाँधी को यह उत्तर देना चाहिए था कि सारे हिन्दू कांग्रेसी हिन्दू महासभा में चले जाएँ और 07 प्रतिशत मुस्लिम कांग्रेसी पाकिस्तान चले जाएँगे अतः कांग्रेस को समाप्त कर दिया जाए। लेकिन हिन्दुओं के साथ खुल्लम–खुल्ला धोखा हुआ और उन्हें बेवकूफ बनाया।

यदि खंडित भारत का शासन हिन्दू महासभा के हाथ आता तो भाई परमानन्द गवर्नर बनते और वीर सावरकर प्रधानमंत्री। कांग्रेस को छोड़कर आने वाले अधिकांश नेताओं को विभिन्न मंत्रालय तो दिए जाते किन्तु उन्हें भी अपनी सोच–मानसिकता बदल कर कार्य करना होता तब राम राज्य आ जाता– अच्छा संविधान बनता– राष्ट्रीय ध्वज भगवा होता– हिन्दू धर्म सरकारी धर्म बनता– गोहत्या और शराब बन्दी लागू होती। एक हजार साल गुलाम रहे हिन्दू के आँसू पोंछे जाते और उसके चेहरों पर मुस्कान होती। मन्दिरों का जीर्णोद्धार होता है। हिन्दू अब भी जाग जा क्योंकि तेरा अस्तित्व खतरे में है।

इन्द्रदेव गुलाटी,
बुलन्दशहर
मो. 8958778443

डी.ए.वी. ककराला में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह

डी.ए.वी. ककराला में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस सप्ताह के दौरान छात्र–छात्राओं को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया। विद्यालय में सड़क सुरक्षा विषय पर कला चित्रण प्रतियोगिता, यातायात चिह्नों की पहचान प्रतियोगिता एवं भाषण द्वारा जागरूकता अभियान का संचालन किया गया। इस कार्यक्रम में इन्स्पेक्टर समाना–पातड़ा सर्कल श्री कर्मवीर सिंह, ट्रैफिक इंचार्ज पातड़ा श्री रामकेश शर्मा और ए.एस.आई. स. गुरजाप सिंह ने सड़क

सुरक्षा एवं यातायात नियमों के पालन सम्बन्धित जानकारी सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों, चालकों और परिचालकों से सांझा की। उन्होंने यातायात नियमों के पालन पर विशेष ध्यान देने के प्रति सभी को प्रोत्साहित किया। जिसमें प्रत्येक परिवार एवं समाज का विशेष योगदान होगा।

प्रतियोगिताओं के समापन पर प्राचार्य श्री मनोज कुमार शर्मा ने सभी छात्रों को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति प्रतिबद्ध रहने का संदेश दिया और सभी आए हुए पुलिस अधिकारीगणों व बच्चों, अध्यापकों का आभार व्यक्त किया।

बी एस डी डी.ए.वी. हैदराबाद में गुरु पूर्णिमा का आयोजन

हैदराबाद स्थित बी एस डी डीएवी विद्यालय के प्रांगण में 27 जुलाई 2018 के दिन गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर 7वीं कक्षा के छात्रों द्वार गुरु शिष्य परंपरा पर आधारित एक एकांकी प्रस्तुत की गई। जिसमें स्वामी दयानंद के जीवन के सारांश को दिखाया गया, कि किस प्रकार मूलशंकर अपना घर बाहर छोड़कर सन्यास ग्रहण कर लिया तथा बाद में स्वामी विरजानन्द जी के

सानिध्य में समाज रक्षक स्वामी दयानंद बने। स्वामी दयानंद जी ने समाज में किस प्रकार बदलाव लाया और अंत में स्वामी जी के मार्गदर्शन पर स्वामी हंसराज जी ने "दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल" की स्थापना की। डीएवी विद्यालय गुरु शिष्य परंपरा का पालन सदियों से करता आ रहा है और आज इस परंपरा का पालन वर्तमान छात्र समुदाय को करना है।

आर्य समाज अलवर ने मनाया स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य जन्म दिन

पहले दिन आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू राम आर्य को 98वाँ जन्मदिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। यह कार्यक्रम चार दिन तक चला। पुरोहित पं. शिव कुमार कौशिक, पं. विनोदी लाल दीक्षित, पं. धमेन्द्र शास्त्री एवं रघुवीर द्वारा वेद मंत्रों व विशेष सामग्री से यज्ञ में आहुतियाँ दी गई। जिसके उपरान्त ईश वन्दना एवं अतिथियों का तिलक लगाकर व पीत वस्त्र अर्पित कर स्वागत किया गया। श्री किशोरी लाल आर्य, प्रधान, आर्य समाज, खैरथल को अलवर जिले में आर्य समाज के क्षेत्र में कार्य करने के लिए

'आर्य शिरोमणि' उपाधि प्रदान की गई तथा स्मृति चिन्ह एवं शाल ओढ़ाकर व 4100 रुपये भेंट कर सम्मानित किया गया।

वक्ताओं ने श्री छोटू सिंह जी आर्य को स्मरण करते हुए कहा कि आर्य जी ने अपना 'सम्पूर्ण' आर्य समाज को समर्पित कर नारी शिक्षा को बढ़ावा दिया।

दिनांक 05 अगस्त, 2018 रविवार को ही 102वाँ मल्टी स्पेशिलिटी चिकित्सा एवं जांच शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. (कर्नल) सतीश माथुर ने रिबन काटकर किया। शिविर प्रातः 10 बजे से 12.30 बजे तक लगाया गया। शिविर में 350 रोगियों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं दी गईं।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

डी.ए.वी. हाथी गेट ...

और देशभक्ति की भावना का संचार किया। विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय सैनिकों की बहादुरी का पूरा विश्व साक्षी है। कारगिल युद्ध के बारे में बताते हुए कहा कि भारतीय सेना ने लगभग 60 दिनों तक युद्ध लड़ा और पाकिस्तानी हमलावरों के वर्चस्व वाली शीर्ष चौकी पर कब्जा कर विजय पताका फहराई। उन्होंने कारगिल युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देकर देश की रक्षा करने वाले जाँबाज अमर सपूत कैप्टन विक्रम बतरा, सौरव कालिया व अन्य सिपाहियों की गौरव गाथा का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

पिंसिपल अजय बेरी ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो हमेशा विश्व शाँति में विश्वास रखता है लेकिन अगर कोई देश इसकी अखण्डता पर हमला करता है तो भारतीय सेना इसका मुँहतोड़ जवाब देती है। कारगिल विजय दिवस ऐसा दिन है जो हमें भारतीय होने पर गर्व महसूस कराता है। इस पर स्कूल के एन.एस.एस. तथा एन.सी.सी. के तीनों विंग के कैडेट्स, वाइस प्रि. राजेश शर्मा, आर्मी अफसर श्री मुनीश गुप्ता, श्री यशपाल शर्मा, श्री विकास पराशर, वरिन्दर ठाकुर तथा स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 08/09-08-2018

डी.ए.वी., सेक्टर-49, गुरुग्राम में हुआ वार्षिकोत्सव

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–49, ग्राम के प्रांगण में कक्षा नौंवी का वार्षिकोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय की प्रबंधक श्रीमती आदर्श कोहली उपस्थित थीं। इनका स्वागत करते हुए विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती चारु मैनी ने प्रतीक स्वरूप 'नई पौध' भेंट की। अभिभावकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हर विद्यार्थी में एक विशिष्ट गुण है जो उसकी व्यक्तिगत पहचान बनाने में सहायक हो सकती है, और हम सबको उसी गुण को निखारते हुए उनकी प्रशंसा करनी चाहिए तथा उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकर करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। तदुपरांत 'दीप प्रज्ज्वलन' तथा शास्त्रीय नृत्य 'भूमि मंगलम्' के साथ इस रंगारंग कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

यह संपूर्ण कार्यक्रम 'पर्यावरण संरक्षण' विषय को लेकर आयोजित किया गया था जिसका शीर्षक था *'रिसर्जन्स–द न्यू बिगनिंग'*। कक्षा नवीं के छात्रों ने अपने अभिभावकों के समक्ष अपने उत्तम कौशल का प्रदर्शन करते हुए सर्वप्रथम एक अंग्रेज़ी नृत्य नाटिका *'सागा ऑफ नेचर'* प्रस्तुत किया। तत्पश्चात सभी अभिभावक एवं मुख्य अतिथि 'सेवियर्स गली' की ओर बढ़े, जहाँ विद्यार्थी अपनी बनाई हुई ऐसी वस्तुओं की प्रस्तुति दे रहे थे जो इस धरती को हरा–भरा बनाए रखने में सहायक हो, अनुपयोगी वस्तुओं के प्रयोग से उन्होंने जो नई वस्तुएँ बनाई थी, उन्हें देखकर सभी हतप्रभ रह गए। इसके बाद "नुक्कड़ नाटक" के द्वारा विद्यार्थियों ने प्रदूषण जैसे संवेदनशील विषय के प्रति सबको जागरूक करने का उत्तम प्रयास किया। फिर लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की प्रेरणा देते हुए विद्यार्थियों ने *'योगा फ़ॉर लाइफ़'* प्रस्तुत करते हुए ताल से ताल मिलाते हुए कई योगासन किए। तदुपरांत 'लाइव बैंड' द्वारा धरती को समर्पित एक कर्णप्रिय गीत प्रस्तुत किया गया। अंतिम कार्यक्रम था 'ओर्केस्ट्रा' जिसमें विद्यार्थियों ने वाद्य यंत्रों द्वारा एक मनभावन धुन बजाई, सभी विद्यार्थियों के बीच सामंजस्य तथा उनके आत्मविश्वास और उत्साह को देखकर अभिभावक बहुत प्रसन्न थे।

एम.आर.ए. डी.ए.वी. सोलन में शहीद उधम सिंह बलिदान दिवस का आयोजन

आर्य युवा समाज के तत्वावधान में प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा के मार्गदर्शन में एम.आर.ए. डी.ए.वी. सोलन में देश के महान बलिदानी अमर सपूत शहीद उधम सिंह के **"बलिदान दिवस"** पर विद्यालय परिसर में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक यज्ञ, गायत्री मंत्र तथा वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा किया गया।

इस अवसर पर नूरपुर, हिमाचल प्रदेश, में रहने वाले स्वामी वेद प्रकाश का सानिध्य विद्यालय परिवार को मिला। स्वामी जी ने अपने प्रवचन में कहा कि शहीद उधम सिंह भारत के महान क्रांतिकारी व युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। उनकी वीरगाथा ने हम सभी को आज भी आज़ादी के संघर्ष भरे दिनों का स्मरण दिलाया। उस महान व्यक्तित्व के अदम्य साहस का ही परिणाम था कि भारत में अनेक युवाओं ने आज़ादी के उस महान यज्ञ में अपनी आहुति समर्पित की। आज उनकी पुण्यतिथि पर उनको शत् शत् नमन और श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अपने राष्ट्रसपूतों के पदचिह्नों पर चलकर सदैव राष्ट्र रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। शहीद उधम सिंह का जीवन भी हमें यही प्रेरणा देता है।

इस आयोजन का उद्देश्य भी यह है कि बच्चों में राष्ट्रीयता तथा आपसी भाईचारे का विकास हो सके। जिससे विद्यालय के विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

उन्होंने समस्त डी.ए.वी. परिवार की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किया और आर्य समाज के सभी सदस्यों, अभिभावकों, अध्यापकों, बच्चों व स्थानीय लोगों तथा डी.ए.वी. से आये प्रिंसिपल एच.सी. संरकेक व श्री लखवीर सिंह का धन्यवाद किया।

अन्त में शान्ति पाठ द्वारा कार्यक्रम का समापन किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**